श्री राधासर्वेश्वरो विजयते

श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः

भजन संध्या

परम कृपालवे श्रीसद्‌गुरु भगवते नमो नमः

श्री राधासर्वेश्वरो विजयते श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः

पू० सद्‌गुरुदेव श्री करुण दास जी महाराज द्वारा रचित
एवं संग्रहित भजनों का संग्रह

भजन संध्या

संपादक – **किशोरी शरण**

प्रकाशक –

राधा कृष्ण परिवार

भक्ति धाम कालोनी, आन्यौर परिक्रमा मार्ग

गोवर्धन, मथुरा – 281502

(उत्तर प्रदेश)

email-**info@radhakrishanparivar.com**

website-**www.radhakrishanparivar.com**

प्रकाशन तिथि –

18 नवम्बर 2015

(गोपाष्टमी)

प्रतियाँ – 3000

न्यौछावर – 40 रूपये

मुद्रक –

प्रमोद प्रिन्टर्स

मसानी तिराहा,

वृन्दावन रोड, मथुरा

(उत्तर प्रदेश)

भजन – सूची

भजन		पृष्ठ संख्या
अजब तेरी कारागिरि भगवान्	अ	42
अरे दिल गाफिल! लौट चला आ		42
अब मैं मर मरके जीने लगा हूँ		95
आज राधा रानी बरसाने आई हैं	आ	6
आई सज धजके बारात		11
आज मैं सुहागिन हुई श्याम वर पाके		12
आज मैं निकुंज की सखियों में मिल गई		16
आ मेरे मन गोवर्धन		43
आ जाओ मेरे साँवरे, व्याकुल हैं मेरे प्रान		83
आरति गावो भक्तमाल की		100
आरती श्री गिरिराज प्रवर की		100
ईश्वर अल्लाह वाहे गुरु	ई	44
उड़ गई रे निंदिया मेरी	उ	65
ओ मूर्ख बंदे क्या है रे जग में तेरा	ओ	75
क्या क्या कहूँ दिखलाती हैं	क	78
कृष्ण कृपाष्टक		4
कान्हा की बँसी जब बजने लगी		22
कजरा बनके बस जा श्याम		35
कर तन मन धन अर्पन		43
कर ले भजन तू कर ले भजन		53
करुणा सागर अब तो		84
काला है कान्हा, राधा है गोरी		25
कान्हा रे कान्हा!		26
किसी को रामायण किसी को वेद भाया है		47

कितने भव पार हुए		54
कोई गोपियाँ ये शिकायत लाई		24
कोई पीवे संत सुजान		60
कोई लाख करे चतुराई		74
गया बीत जीवन पर जीना न आया	**ग**	45
गर्भ में पलती कन्या जन्म को तरसी है		80
गिरिराज महाराज आज लाज तेरे हाथ		27
गुरु जी! तेरी महिमा अपरम्पार		1
गुरु बिन जिया न जाये		91
गोकुल नगरिया में बाजे बधाई		9
घर घर मंगलाचार	**घ**	8
चिंतामणि के फेर में	**च**	85
चोर चोर का सारे बीरज में		66
छूटे दुनियाँ तो छूटे कोई गम नहीं	**छ**	27
छोडूँगी न मैं तुम्हें छोडूँगी न मैं		41
जब तक संत शरण नहीं आये	**ज**	46
जप के तू देख ले माला से नाम		48
जब से आई हाथोंमें तुलसीकी माला		49
जरा तारों से तारे मिला कर तो देख		73
जर्रे जर्रे में है झांकी भगवान् की		77
जग के बंधन तोड़ के		86
जब तक है आकाश पे सूरज		89
जिस घर को हम कभी छोड़ते नहीं		45
जिस दिन को भूला उम्र भर		46
जोगनियाँ बन अपने श्याम की		86
डालो झोली में राधा राधा नाम	**ड**	17

तीन बार भोजन भजन एक बार	**त**	59
तुम रूठे रहो नित मन मोहन		32
तुलसी की माला से जाप करो रे		50
तुझ बिन ना चैन पाऊँ		82
तूने ये क्या किया, मुझको धोखा दिया		25
तू पंख लगादे श्याम मुझे		39
तेरी अखियाँ हैं जादू भरी		36
तेरा नाम सदा मुख आए		38
तेरे मन्दिर में आना मेरा काम है		39
तेरी बिगड़ी सब बन जाई		52
तोड़कर सारे बन्धन तू आजा शरण		53
द्वारिकानाथ रणछोड़ प्यारे	**द**	94
दासी हूँ तेरी रख पास मेरे साँवरे		96
दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया		40
दीवाना हूँ तेरा कान्हा		35
दीनबंधू जागिये, कृपासिंधू जागिये		68
दुनियाँ की कोई कामना		98
देखो तो हर तरफ से आवाज यही आई है		7
देखो दुल्हा बना है नन्दलाला		14
देदे थोड़ा प्यार तेरा क्या घट जायेगा		33
ध्यान घनश्याम का दीवाना	**ध**	97
नाम जपो लेकर माला	**न**	51
नाम हरि का जप ले बंदे		56
नैनन में मोरे मदन गोपाल समायो		61
पंछी लेजा रे संदेश	**प**	98
प्रभु जी कठपुतली मोहि बनाओ		30
पाँव में घुँघरु बाँध के आई		37

पाके तू पाके, नर का चोला		69
ब्रज मीठो वैकुँठ खारो	ब	69
बल चतुराई काम न आये		70
बड़ी मन्नतों से था पाया तुझे		74
बांधके सेहरा दुल्हा बनकर		12
बिना माँ बाप के अनाथ रोये बालिका		93
बिगड़ी बना हमारी, ऐ दो जहाँ के वाली		93
बोलूँ करूँ या कुछ भी विचारुँ		38
भादों की अष्टमी आई	भ	7
भानु लली लाडिली भानु लली		19
भाग दौड़ ले चाहे जितना		70
भूले मनवा समझ क्यों ना पाये		71
भोले तेरी शान निराली		76
मत जाना रे बटोही उस मग से	म	72
मन चंगा तो कठोती में गंगा		90
मत रो मत रो आज लाडली		97
मंद मधुर मुस्काये गयो री		66
मंगतापन सदा के लिये मिट गया		71
मन्दिर में रहते हो भगवन्		95
माला तुलसी की जपे जो		49
माथे तिलक गले में कंठी		51
मुरली बजाने वाले		36
मुक्ति के दाता अमंगल हरण		20
मुरलिया बाजी यमुना तीर		22
मुरली बजा के मोहन		23
मेरे श्यामजी दी चली ऐ बारात		13
मेरे सोए भाग जगा दे		19

मेरे जैसे नैन श्याम सबको लगा दे		31
मैं तो हाथ में लेके इकतारा		82
मैं हुँ दीवाना तेरा		31
मोहे सांवरा सलोना पसंद आ गया		67
यारों सुनो क्या करता है महापाप चुगलखोर	य	79
ये जिंदगी धोखा दे जाएगी		60
रसना लगा रटना सदा हरि नाम की	र	58
रग रग में मेरा श्याम		99
रहके भी दूर होती हैं अति पास बेटियाँ		81
राधा कृपाष्टक		2
राधा प्यारी लाड़िली किशोरी श्यामा भामा		18
राम नाम जाप कर, भूल के ना पाप कर		57
रो रो नैना बाट निहारे		84
रो रो बिनती करूँ मैं हनुमान से		92
लाड़ली राधिका प्यारी करुणामयी	ल	17
लुट गई लुट गई रे गिरधारी		62
लोक लाज छोड़ दो		15
वंशी बजाय कोई जमुना किनारे	व	68
वाह वाह भइ मौज फकीराँ दी		77
श्यामा जे तू फड़ेंगा हथ मेरा	श	28
श्याम तेरे नैना जुल्म कर डारे		41
श्वाँसा छूट गई तो सोचो		55
श्याम मोरी अखियाँ भई दीवानी		64
श्याम तेरी याद सताये		99
सखी री आज बाजे बधाई चहूँ ओर	स	6
सखी मेरी श्यामा की आज सगाई		15
सदा ही भजूँ राधिका कृष्ण जोरी		21

सखि री! मोहि बंसी सौत सतावै 64
सुन ले साँवरिया, न देर लगा 63
सुखिया पूछे श्याम से 88
सोने का पलना, पलना में ललना 10

ह

हरि बोल हरि हरि बोल 58
हाय मेरा दिल नहीं लगता 34
हे प्रिया प्रियतम बिहारी 21
हे बिहारी मैं तुम्हारी 29
हे तारनहार कृपा कर 30
हे श्याम! तेरी बाँसुरी ने 33
हे पाण्डुरंगा विट्ठला 87
हे गोपाल गवाह तू मेरा 89
है कालीदह में दुश्मन जो मेरा 65

भजनः – 1

गुरु जी! तेरी महिमा अपरम्पार ।
रूप अनेक धार के तूने कर दिया भव से पार ।।
गुरु जी! तेरी महिमा....
प्रथम गुरु श्री स्वामी जी जिन लौकिक रीति सिखवाई,
दूजे श्री पंडित जी गुरु हरि नाम की महिमा गाई ।
तीजे चौथे राधे बाबा श्री हनुमान पोद्दार ।।
गुरु जी! तेरी महिमा....
पंचम गुरु श्री बालकृष्ण जी षष्टम श्री घनश्याम,
सप्तम् श्री जयदयाल गोयन्दका जी योगी निष्काम ।
अष्टम अष्टयाम कीर्तन के रसिया श्री सरकार ।।
गुरु जी! तेरी महिमा....
नवम् गुरु श्रीजगन्नाथ जी गावत श्री महावाणी,
दशम श्री आचार्य चरण जी रस दीक्षा के दानी ।
गुरु एकादश सभी संत जन बंदऊँ बारम्बार ।।
गुरु जी! तेरी महिमा....
गुरु तत्त्व शिव औढरदानी आशुतोष महादेवा,
बार बार वंदन कर माँगू श्याम राधिका सेवा ।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् गुरुवर करुणा के अवतार ।।
गुरु जी! तेरी महिमा....

भजनः – 2

श्रीराधा कृपाष्टक

पर से पर परमेश्वरी, तुम से पर नहिं कोय
परम अगम्या स्वामिनी, दरस कृपा से होय

1

निकुञ्ज कुञ्ज वासिनी विलासिनी सुहासिनी
सदा प्रियाभिलाषिनी महाप्रभा प्रकासिनी
प्रफुल्ल कञ्ज लोचनी सुभक्त पाप मोचनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

2

स्वकान्त प्रेम रंजनी सुदिव्य रास संजनी
समस्त दुःख भंजनी अनंग की तरंगनी
सुचित्त चोर चोरनी सुमेघ श्याम मोरनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

3

प्रपन्न नेह पोषिनी समस्त शोक शोषिनी
प्रियानुराग तोषिनी दया कृपा परोसिनी
अखण्ड प्रेम धारिनी समस्त सुक्ख कारिनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

4

नवीन रूप माधुरी क्षणे क्षणे सुवर्धिनी
अनन्त शारदा उमा रमाभिमान मर्दिनी

सुचारु रूप चन्द्रमा चकोर श्याम भामिनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

5

सुरूप कान्ति देरव चन्द्र दामिनी छिपे घटा
लजा गया सुकञ्ज भी पताल नीर जा छिपा
अनन्त चन्द्र दामिनी सुकञ्ज गर्व घातिनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

6

प्रवीन कुञ्ज केलि में प्रचण्ड वेग झेलनी
कलिन्द नन्दिनी तटे सुरास नृत्य खेलनी
कृपानिधे ब्रजेश्वरी प्रसन्नता प्रदायिनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

7

सदा सुहागिनी प्रयंक प्रीतमांक शायिनी
विलास रास कोविदे अशेष सुक्रव दायिनी
सुहाग गर्व गर्विते निकुञ्ज सेज राजिनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

8

कथा व्यथा विनाशिनी समस्त लोक पावनी
मनोज ताप गंजिनी सदैव भक्त भावनी
उदास दास पे दया करो दयानिधानिनी
कृपातुरे बना मुझे कृपा सुदृष्टि भाजिनी

भजनः – 3

श्रीकृष्ण कृपाष्टक

1

सुभक्ति प्रेम लक्षणा सुदान कीजिये प्रभो
न छोड़िये भवाटवी उबार लीजिये प्रभो
भला बुरा हुँ आपका अहेतु रीझिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

2

न कर्म में अकामता न ज्ञान भक्ति भावना
विराग त्याग साधना नहीं पवित्र कामना
विकार से सना हुआ सँवार लीजिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

3

गिरा घिरा हुँ भोग रोग शोक दोष में सदा
न चैन चित्त में विलाप पाप ताप आपदा
अधीन दीन की पुकार पे पसीजिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

4

न योग्यता कहीं प्रभो तुझे रिझा न पा रहा
यही विचार बार बार चित्त को जला रहा
तुझे रिझाऊँ मैं सदा सुबुद्धि दीजिये प्रभो

कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

5

अभाव से भरा हुँ मैं स्वभाव भी मलीन है
फँसा पड़ा प्रपंच में अशांत चित्त दीन है
सुभाव संपदा सुबीज चित्त बीजिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

6

न पार जा सके सुनाव कर्णधार के बिना
न आसरा गरीब का दयालु की दया बिना
गरीब हूँ गरीब को दया निवाजिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

7

न कर्म भाव सत्य है, न भाग्य रेख काम की
न वाणि में मिठास है, न प्रीति सत्य नाम की
कुभाव कर्म देख के कभी न खीजिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

8

रहूँ सदा निकुञ्ज में प्रिया सखी सुभाव से
करूँ सदा सनेह सेव अष्टयाम चाव से
पुकार दास की सुनो सुपंथ दीजिये प्रभो
कृपा करो अनाथ पे सनाथ कीजिये प्रभो

भजनः – 4

आज राधा रानी बरसाने आई हैं,पाठ प्रभु प्रेमका पढ़ाने आई हैं
योगी ज्ञानी ध्यान लगावें
कृष्ण प्रेमरस फिर भी ना पावें
वही रस ब्रज में बहाने आई हैं, पाठ प्रभु प्रेम का पढ़ाने आई हैं
दिव्य प्रेम का मर्म बताने
सखियों संग प्रकटी बरसाने
रीति प्रभु प्रीतकी सिखाने आई हैं,पाठ प्रभु प्रेमका पढ़ाने आई हैं
प्रकटी जमुना और गोवर्धन
कुंज सरोवर और वृन्दावन
लोक में गोलोक दर्शाने आई हैं,पाठ प्रभु प्रेम का पढ़ाने आई हैं
महा भाव रूपा श्री राधा
सुमरित मिट जाए भवबाधा
नैया पार लगाने आई हैं, पाठ प्रभु प्रेम का पढ़ाने आई हैं

भजनः – 5

सखी री आज बाजे बधाई चहूँ ओर ।
घर घर आंगन चौंक पूरे हैं, कैसो सज्यो है सिंह पोर
करि सोलह सिंगार गोपियाँ, चली महल की ओर
कीरति रानी कन्या जाई, गलीगली मच गया शोर
शुक सारिका अरु कोयल बोले, नाचत है वन मोर
नाचे बिन मोपे रह्यो ना जाये, हिय में उठत हिलोर

भजनः – 6

भादों मास तिथि अष्टमी, कीर्ति कन्या जाई
बरसाने वृषभानु घर, बजने लगी बधाई

भादों की अष्टमी आई, हुरदंग मच्यो बरसाने में
कीरत ने लाली जाई, सब लगे बधाई गाने में
प्रकट भई वृषभान गोप घर राधा राज दुलारी
नाचे गाये खुशी मनाये, ब्रज के नर और नारि
दुंदुभि स्वर्ग में बाजी, लगे देव पुष्प बरसाने में
वर्ष गाठ पे नंद यशोदा कान्हा न्यौत बुलाये
भानु कीरति नंद यशोदा मिले प्रेम सों आये
तू धन्य कीरतिरानी,नहीं कमी रही कुछ पानेमें
देत आशीशें करत बढ़ाई जी भर बारम्बार
लाखलाख युग जिये कुमारी मिले श्यामभरतार
यशोदा के लाडला जैसा,नहीं ढूंढा मिले जमानेमें

भजनः – 7

बरसाने वृषभान घर, श्रीराधा अवतार
दुंदुभि बाजे स्वर्ग में, घर-घर मंगलाचार

देखो तो हर तरफ से आवाज यही आई है,
आज तो बधाई है आज तो बधाई है
द्वार वृषभानु जी के नारि नर आने लगे
होके मदमस्त सारे गोपी ग्वाल गाने लगे

बजे पायल छमाछम – बजे मृदंग तिनकधिन
सुध बुध भूले सारे – रहा ना कोई भी गम
आज सबके दिल की तार – तार झनझनाई है, आज तो....
गोप वृषभानजी को बधाई देने लगे
बधाई देने लगे, बधाई देने लगे
नाचें गायें दे दे ताली – बनी शोभा निराली
आशीशे देने लगे – जिये जुगजुग ये लाली
आज तो बरसाने घर – घर में खुशी छाई है, आज तो....
लली को गोद में ले बधाई गाने लगे
नाचते साथसाथ औरों को नचाने लगे
पिता वृषभानकी जय – दादा महिमानकी जय
श्री बृजधाम की जय – राधिका नाम की जय
जय – जय कार की आवाज तीन लोक छाई है, आज तो....

भजनः – 8

घर घर मंगलाचार, आज कीरत ने कन्या जाई है,
बरसाने बजत बधाई है....
ब्रह्म लोक सों नारद आये, नाचें गायें वीन बजाएँ
बोलें जय जय कार, धन्य ये घड़ी सुहानी आई है,
बरसाने बजत बधाई है....
कीरत श्री वृषभानुदुलारी, रसिया मनमोहन की प्यारी
आई ले अवतार, प्रेम का अमर संदेशा लाई है,
बरसाने बजत बधाई है....

नन्द यशोदा न्योत बुलाए, पुरबासी सब मिल जुल आये
नाचें दे दे ताल, सभी ने अपनी सुध बिसराई है,
बरसाने बजत बधाई है....
रंग महल फूलों से सजायो, द्वारे बंधनवार बँधायो
केले के खम्भ द्वार, द्वार पे आज बजी शहनाई है,
बरसाने बजत बधाई है....
सज धज के सब गोपियाँ आई, कीरति रानी देत बधाई
पायल की झन्कार, महल में गोपिन धूम मचाई है,
बरसाने बजत बधाई है....

भजनः – 9

गोकुल नगरिया में बाजे बधाई, आज आयो गोविंद
गलियों में घर घर में खुशियाँ हैं छाई, आज आयो गोविंद
पतझड़ के मौसम में आई बहारें
दर्शनको सखियोंकी लागी कतारें
सखियों की अखियों में छायो कन्हाई, आज आयो गोविंद....
छोटेसे कन्हैयाकी बड़ीबड़ी अखियाँ
बार बार बलिहारी जाती है सखियाँ
जन्मों के पुण्यों से प्रेम निधि पाई, आज आयो गोविंद....
नन्दभवन फूलों से सजायो
आँगन मोतिन चौक पुरायो
नंद जी के द्वारे पे बाजे शहनाई, आज आयो गोविंद....

कितना सुन्दर श्यामसलोना
कोई इन पर करे न टोना
नजरें उतारें सब लोग लुगाई, आज आयो गोविंद....
नाचें गायें ब्रज की बाला
ढोल बजायें मिलकरके ग्वाला
सखियों ने आँगन में धूम मचाई, आज आयो गोविंद....

भजनः – 10

सोने का पलना, पलना में ललना, ललना झुलाओ खींच डोर
सखियों नाचो झूमक झूम
सोने की मुरली हीरे जड़ी है, मोर मुकुट मोतिन की लड़ी है
झाँकी बनी है चित्तचोर, सखियों नाचो झूमक झूम
मात यशोदा पलना झुलाए, होले होले लोरी सुनाए
झूले नन्दकिशोर, सखियों नाचो झूमक झूम
सज धज कर ब्रजनारी आई, मिल जुल कर सब गाएँ बधाई
हिय में उठत हिलोर, सखियों नाचो झूमक झूम
एक एक सब सखियाँ आओ, बारी बारी पलना झुलाओ
नाचे मन का मोर, सखियों नाचो झूमक झूम
रिमझिम रिमझिम बदरा बरसे, आसमान में बिजली चमके
छाई घटा घनघोर, सखियों नाचो झूमक झूम
देत आशीषें सगुन मनाएँ, करुण दास बलिहारी जाए
नजर उतारें तृण तोर, सखियों नाचो झूमक झूम

भजनः – 11

आई सज धजके बारात, मेरे श्याम पियाके साथ
नाचो गाओ आज मिली है, खुशियों की सौगात
ढोल नगाड़े और शहनाई
बाजे चारों ओर बधाई
झूम झूमके नाचते बीते, आज ये सारी रात। आई....
सखियाँ निरखे नट नागर को
नदियाँ उमड़े ज्यौं सागर को
आज का दिन ये कभी ना बीते, हो जाये लम्बी रात। आई....
सखियोंके संग राधा प्यारी
दुल्हिन भेष सुरंगी सारी
हाथ लिये वरमाला चाली, मंद मंद मुस्कात। आई....
सेहरा बाँधे आये बिहारी
मोतिनकी लड़ियाँ अति प्यारी
नैन से नैन मिले दोनों के, हो गई मुलाकात। आई....
पहले अपना शीश झुकाओ
फिर श्यामा से ब्याह रचाओ
तब तक झुकना जब तक माला, पहिनाई नहीं जात।आई....
भ्रमर देरवने शीश झुकाया
तब तक हार गले पहनाया
रंग बिरंगे फूलों की हुई, अम्बर से बरसात। आई....

भजनः – 12

आज मैं सुहागिन हुई श्याम वर पाके

अब तक तो थी दर दर की भिखारिन
आज मैं धनवान हुई, श्याम धन पाके

आज मैं सहागिन....

अब तक तो थी दुनियां में अकेली
आज मैं सनाथ हुई, श्याम नाथ पाके

आज मैं सहागिन....

अब तक तो दुनिया को मैंने रिझाया
आज बड़ी खुश हूँ मैं श्यामको रिझा के

आज मैं सहागिन....

अब तक तो भाग मेरे सोते रहे थे
आज मेरे भाग जगे श्यामको बुलाके

आज मैं सहागिन....

भजनः – 13

बांधके सेहरा दुल्हा बनकर श्यामसुन्दर वर आ गया
कर लो दर्शन

अद्भुत सुन्दर रूप देखकर चन्दा भी शरमा गया
कर लो दर्शन

घोड़ी सजी दुल्हा सजा और सजे हैं सब गलियारे
दुल्हिन सजी सखियाँ सजी और सजे हैं महल चौबारे
कुंज महल की देख के शोभा जो देखे चकरा गया
कर लो दर्शन

बाजे बजे प्यारे लगे और आतिशबाजी छूटी
सखियाँ दे ताली गाली पे गाली सुनसुन के हँसी फूटी
गाली सुन सुन बारातियों के मन में आनन्द छा गया
कर लो दर्शन

चौंकी चढ़ा टीका लगा दुल्हा के चरण परवारे
दीपक जले आरती करें तृण तोड़के नजर उतारें
ऐसा दुल्हा तीन लोक नहीं सबके मन को भा गया
कर लो दर्शन

राधा के साथ फेरे ले सात फिर सात वचन भरवाएँ
कर करके रीत भर मनमें प्रीत सखियाँ गठजोड़ कराएँ
करुण दास ब्याहुला सुना के मनवांछित फल पा गया
कर लो दर्शन

भजनः – 14

मेरे श्यामजी दी चली ऐ बारात,नी आओ मिल पाओ भंगड़ा
अज नच के वरवाओ करामात,नी आओ मिल पाओ भंगड़ा
ऐ मोका फिर कदे न मिलना
दिलदा फुल फिर कदे न खिलना
अज खुशियाँ दी मिली सौगात, नी आओ मिल पाओ भंगड़ा
घोड़ी चढ़े हैं कृष्ण कन्हैया
आगे आगे दाऊ भईया
देखो लेत बलैया मात, नी आओ मिल पाओ भंगड़ा
ढोल बजाओ नाले खुशियाँ मनाओ

नच्चो ते नचाओ सारे ठुमका लगाओ
मैं वी नच्चाँगी हुण सारी रात, नी आओ मिल पाओ भंगड़ा
अग्गे दुलहा श्याम जी दी झाँकी
पीछे पीछे चले बाराती
अज फुल्लाँ दी होई बरसात, नी आओ मिल पाओ भंगड़ा

भजन: – 15

देखो दुल्हा बना है नन्दलाला, दुल्हिन वृषभानु की लली
आज सखियोंसे पड़ गया पाला,सखियोंके आगे पेश न चली
दोनों ही चंदा और दोनों चकोर हैं
दोनों ही दोनों के बने चित्तचोर हैं
पर राधा है गौरी श्याम काला, दुल्हिन वृषभानु की लली
बाप कौन आज तक कोई नहीं जानता
नन्द हैं या वसुदेव स्वयं भी नहीं पाता
ये तो दुलहा दो बापों वाला, दुल्हिन वृषभानु की लली
याकी बहना का क्या कहना
चोरी अर्जुन से लड़े जाके नयना
कैसे अर्जुन पे जादू डाला, दुल्हिन वृषभानु की लली
कुन्ती बुआ का बड़ा बुरा हाल है
बिन ब्याही कुन्तीने जाया एक लाल है
जाके चुपके से नदिया में डाला, दुल्हिन वृषभानु की लली
याके भईया की अद्भुत है माया
तीन युग बड़की से ब्याह रचाया
कहीं मिली न कोई छोटी बाला, दुल्हिन वृषभानु की लली

भजनः – 16

लोक लाज छोड़ दो, घूँघट को खोल दो
आज मेरे श्याम का विवाह, गुजरिया नाच जरा झूमके
आज के दिन की बात निराली
जग मग जगमग जगे दिवाली
नाचें गायें दे दे ताली,सबके मन बड़ा उत्साह। गुजरिया....
आज का दिन है बड़ा सुहाना
बाँध के सेहरा आया है कान्हा
जिसने देखा हुआ दिवाना,चला प्रेम की राह। गुजरिया....
आजके दिनकी जाऊँ बलिहारी
दुल्हिन बनी है राधा प्यारी
श्रीराधा वृषभानु दुलारी,श्याम मिलन की चाह।गुजरिया....
द्वारे पे बाजे शहनाई
सखियाँ गायें गीत बधाई
नाच नाच सुध बुध बिसराई,हो गई बेपरवाह। गुजरिया....

भजनः – 17

सखी मेरी श्यामा की आज सगाई ।
भानुराय की कुँवरी राधिका नंद के कुँवर कन्हाई
रंग रंगीली सखी सहेली रंग महल में आई
मणिमय आँगन चौक पुरे हैं द्वार बजे शहनाई
गायें गीत मनोहर बाणी मंगल बजत बधाई
नख शिख लौं श्रृंगार धराके मणि चौंकी पधराई

स्वस्ति वाचन करें विप्रजन दे आशीष सवाई
श्याम के नैना प्यारी बसत हैं प्यारी के नैन कन्हाई
श्यामा श्याम की भई सगाई देवन फुल बरसाई
करुण दास या रूप छटा पे बार बार बलि जाई

भजनः – 18

आज मैं निकुंज की सखियों में मिल गई
दिल की कली खिल गई
मंजिल गुरुदेव की कृपा से मिल गई
दिल की कली खिल गई
अष्टयाम सेवा सुख लिया करेंगे
भर के प्याले प्रेम रस पिया करेंगे
देख देख श्यामा श्याम जिया करेंगे
नैंनो को गौर श्याम छबि मिल गई। दिल की....
प्रेम सरस रंग की बरसात है जहाँ
बन्धन मुक्ति परे की बात है जहाँ
युगल रूप प्रेम साक्षात् है जहाँ
ऐसे वृन्दावन की गली मिल गई। दिल की....
मन में श्यामा श्याम बिन ओर न रहा
आज मेरे सुख का ओर छोर न रहा
अब तो दिल पे मेरे कोई जोर न रहा
युग युग प्यासे को गंगाजली मिल गई । दिल की....

भजनः – 19

डालो झोली में राधा राधा नाम
भागे आयेंगे पीछे पीछे श्याम
भक्ति भाव से जो भी कोई राधे राधे बोले
मन मोहन उस बड़ भागी के पीछे पीछे डोले
राधा राधा मनमोहन के, मन को दे विश्राम
डालो झोली में ....
ध्यान योग तप तीर्थ चाहे जितना करले कोई
जब तक राधा नाम जपे न मोहन बस ना होई
वशीकरण ये महामन्त्र है, जप लो आठों याम
डालो झोली में ....
राधा का कर पकड़ कन्हैया बैठे कुंजभवन में
तुमसे सांची कहूँ राधिके मुझको इस त्रिभुवनमें
तुमसे भी प्रिय लगते मुझको,जपें जो राधा नाम
डालो झोली में ....

भजनः – 20

लाड़ली राधिका प्यारी करुणामयी,
मुझसे कब तक यूँ रुठी रहोगी बता
एक पल भी बिना तेरे कटता नहीं,
दूर चरणों से रख मुझको यूँ न सता
मैंने माना कि मैं एक गुनाहगार हूँ,
तेरे काबिल नहीं मैं शर्मसार हूँ

चाहे जैसी भली या बुरी आपकी,
जानकर अपनी कर माफ मेरी खता
शाम वरदायिनी अब तो देर न कर,
दुखिया इस दासी पर डालदो एक नजर
सारी बगिया बिना जल के मुरझा गयी,
फिर बारिश हुई भी तो क्या फायदा
मेरा तेरे सिवा कोई ओर नहीं,
मेरे दु:ख का कोई ओर छोर नहीं
मेरी हालतपे आता तरस क्यों नहीं,
किन जन्मों के कर्मों की है ये सजा

भजनः – 21

श्रीराधा रानी के 32 नाम

राधा प्यारी लाड़िली किशोरी श्यामा भामा
प्रिया अलबेली अलक लड़ैती लाड़ गहेली
नागरी नवीना रम्या रसिका बिहारनी जू
वल्लभा विशाल नैनी सुख दैनी सहेली
स्वामिनी सरोजमुखी सुन्दरि सुजानमणि
श्याम अंग संगनि सुरंग कनकबेली
प्रीतमा प्रवीना प्रेमा प्रेयसी परात्परा
श्रिया हरिप्रिया प्राण जीवन रसरेली

भजनः – 22

भानु लली लाडिली भानु लली
छैल छबीली, गुण गर्बीली, सोने की कली। लाडिली.....
श्रीराधा वृषभान लली तुम, करुणामयी उदार,
डूब रही ये टूटी नैया, करियो याको पार। लाडिली.....
श्रीराधा वृषभान लली तुम, सब पे हो रिझवार,
भर दीजो ये मेरी झोली, देके अपनो प्यार। लाडिली.....
श्रीराधा वृषभान लली तुम, भोरी हो सरकार,
मोकूं तो बस भोरेपन को, ही है एक आधार। लाडिली.....
श्रीराधा वृषभान लली तुम, सांचो है दरबार,
मेरे औगुन पे रीझेंगी, प्यारी जू रिझवार। लाडिली.....
श्रीराधा वृषभान लली तुम, दीनन की रखवार,
नहीं खिवैया टूटी नैया, टूटी है पतवार। लाडिली.....
श्रीराधा वृषभान लली तुम, अशरण शरण कृपाल,
होके दीन शरण में आया, लेहु मोहि सँभाल। लाडिली.....

भजनः – 23

मेरे सोए भाग जगा दे, मेरी बिगड़ी बात बना दे
मेरा बिछुड़ा श्याम मिलादे,राधा रानिये महारानिये
टूटी नैया दूर किनारा,कोई नहीं है मेरा खेवनहारा
मेरी नैया पार लगा दे, मेरी बिगड़ी बात बना दे
मेरा बिछुड़ा श्याम मिला दे, राधा रानिये....

जन्म जन्मसे भटक रहा हूँ,मोह ममतामें अटक रहाहूँ
तूँ आकर राह दिखवा दे, मेरी बिगड़ी बात बना दे
मेरा बिछुड़ा श्याम मिला दे, राधा रानिये....
ब्रह्मांचल पर महल सुहाना,श्याम प्राणधन है बरसाना
श्री धाम का वास करा दे, मेरी बिगड़ी बात बना दे
मेरा बिछुड़ा श्याम मिला दे, राधा रानिये....
तन मन धन सब तेरे अर्पण,युगल रूप में दे दो दर्शन
नैनों की प्यास बुझा दे, मेरी बिगड़ी बात बना दे
मेरा बिछुड़ा श्याम मिला दे, राधा रानिये....
करुणदास दिन रात पुकारे,भीतर सुलग रहे अंगारे
अमृत वर्षा बरसादे, मेरे सारे पाप बहादे
घट प्रेम की जोत जगा दे, राधा रानिये....

भजनः – 24

मुक्ति के दाता अमंगल हरण, राधा के चरण
पावन मनोहर ये सुन्दर वरण, राधा के चरण
चरणों में लाल लाल मैंहदी रची है
पायल में पुष्पों की कलियाँ सजी हैं
बिछुआ भी कहते हैं आओ शरण, राधा के चरण....
हाथ जोड़ चरणों में मुक्ति खड़ी है
प्रेम और करुणा की लागी झड़ी है
मुक्ति जो चाहो तो कर लो नमन, राधा के चरण....
ब्रह्मा शिव विष्णु भी जिनको हैं ध्याते
सृष्टि संरचना की शक्ति हैं पाते
शक्ति के उद्‌गम हैं तारन तरन, राधा के चरण....

श्यामाजूके चरणोंमें जाऊँ बलिहारी
मैं ही क्यों ये दुनिया सारी
दर्शन को तरसे हैं सबके नयन, राधा के चरण....

भजनः – 25

सदा ही भजूँ राधिका कृष्ण जोरी,
जपूँ नाम प्यारो बँध्यो प्रेम डोरी
नहीं अंत आदि सदा सम्प्रतिष्ठा,
सजी सोहनी सूरती श्याम गौरी
नहीं प्रेम की कोइ सीमा दोउन में,
सदा वर्धमानी करें चित्त चोरी
बिहारी बिहारिन निकुञ्जन निहारूँ,
यही चित्त की कामना एक मोरी
करूँ नित्य पूजा बिठाके हृदै में,
करे दास विनती बहोरी बहोरी

भजनः – 26

हे प्रिया प्रियतम बिहारी युगल रस बरसे सदा
भर पीउँ नैनन कटोरन, पीके हिय हरषे सदा
और नहिं कछु माँगू तुमसे, प्यासी तुम्हरे दर्श की
गौर श्यामल रूप मनहर, नैन को दरसे सदा
कुंज कुंज बिहार सेवा, रैन दिन करूँ चाव सों
सेवा सुख लै मन मुदित हो, सरस रस सरसे सदा
करुण दास न दूर होऊँ, एक पल हू आपसे
युगल तन छू चलें हवायें, मेरो तन परसे सदा

भजनः – 27

कान्हा की बँसी जब बजने लगी
राधा भी धीरे धीरे सजने लगी
शाम सवेरे पनघट पे वो ऐसी धुन लगाये
दौड़ी दौड़ी भागी भागी सखियाँ सुन सुन आये
लाज शर्म को वो तजने लगी, राधा ...
रास रचाये बंसी बजाये सबको नाच नचाये
देखो देखो गोपियों के संग राच रचाये
कृष्ण नाम गोपियाँ फिर भजने लगी, राधा ...
बाँके साँवरिया बाँकी नजरिया बाँकी इनकी चाल
आगे आगे देखो कैसे कैसे होते हैं कमाल
बिगड़ी बात फिर सुलझने लगी, राधा ...
शरद पूनम की रात चाँदनी छाय रही हरियाली
देखो देखो यमुना के तट नाचे बनमाली
विरह की अग्नि सुलगने लगी, राधा ...

भजनः – 28

मुरलिया बाजी यमुना तीर
दौड़ी दौड़ी आई गोपियाँ हो के प्रेम अधीर, मुरलिया....
कोई गोपी काम छोड़कर, भोगी मोहके बँध तोड़कर
झूठे जग से मुँह मोड़कर। कोई गोपी श्याम विरह में,
पहुँची त्याग शरीर, मुरलिया....

शरद पूनम की रात उजारी, बंसी वट ठाड़े बनवारी
चहुँ दिशि फूली है फुलवारी। ऐसी बंसी बजी हिय में,
लगा प्रेम का तीर, मुरलिया....
प्रेम खुमारी छाई पवन में,जलमें थलमें और गगन में
ऐसा रस छल के सखियन में। वो तो ऐसी भई बावरी,
नैंनन बरसे नीर, मुरलिया....
ऐसी बंसी की धुन प्यारी, दिल में प्रेम जगावन हारी
तीन लोक जा पे बलिहारी।करुण दास गोवर्धन वासी,
सुन के हुआ फकीर, मुरलिया....

भजनः – 29

मुरली बजा के मोहन तूने ये क्या किया है
दिलको चुरा लिया है मेरे मनको चुरा लिया है
ले ले नाम मेरा मुरली में तूने टेर बुलाया है
और चलाके नैन कटारी दिलका चैन चुराया है
नयना मिला के मोहन तूने ये क्या किया है
दिल को चुरा लिया है मेरे मनको चुरा लिया है
दुनियांकी परवाह नहीं है अबतो सबकुछ छूट गया
एक तुझे चाहा था मैंने तू भी मुझसे रूठ गया
दामन छुड़ा के मोहन तूने ये क्या किया है
दिलको चुरा लिया है मेरे मनको चुरा लिया है
दूर भगाना था बेदर्दी अपने पास बुलाया क्यों

यों ठुकराना था निर्मोही दिलमें प्रेम जगाया क्यों
अपना बना के मोहन तूने ये क्या किया है
दिलको चुरा लिया है मेरे मनको चुरा लिया है
एक झलक दिखलाके प्यारे नैनों से क्यों दूर हुआ
जीवन भर का साथ रहेगा ये सपना क्यों चूर हुआ
सपना दिखा के मोहन तूने ये क्या किया है
दिलको चुरा लिया है मेरे मनको चुरा लिया है

भजनः – 30

कोई गोपियाँ ये शिकायत लाई, कान्हाँ को डांटे यशोदा माई
पकड़े गये चित्तचोर कन्हाई, जब छुप – छुप के माटी खाई
बोल लला मुख खोल लला, इत उत को मत डोल लला,
तेरी मुट्ठी में है क्या, जरा हाँ तो बता,
नहीं तो आज तेरी करूँगी पिटाई। कोई गोपियाँ.....
मुख बाँधे मोहन नहीं बोले, हाथ जोड़ इत उत को डोले,
माँ ने पकड़ लिया, कस के जकड़ लिया,
और ली हाथ में लकुटि उठाई। कोई गोपियाँ.....
खोला मुख मोहन ने जब ही,आँख यशोदा की क्या देखे,
जग सारा का सारा, मुख मण्डल में धारा,
मैया की आँखें भर आई। कोई गोपियाँ.....

भजनः – 31

काला है कान्हा, राधा है गोरी
कैसा है छोरा, कैसी है छोरी
कैसी मिला दी देखो विधिना ने जोड़ी। काला है .....
वन वन गाय चरावत डोले बन के बनवारी
राधिका है महलों वाली लाड़ली सखियों की प्यारी
यमुना किनारे गागरिया फोड़ी – कितने हैं चंचल करते हैं चोरी
राधा हमारी देखो कितनी है भोरी। काला है .....
श्याम न आए एक पल तो फिर राधा घबराए
जिया को चैन नहीं आए कमल सा मुखड़ा मुरझाए
दर्शन को तरसे अखियाँ निगोड़ी – श्याम हैं चंदा राधा चकोरी
नन्द किशोर वृषभान किशोरी। काला है .....
चीर चुराए माखन खाए चुपके चोरी चोरी
रंगीली बरसाने होरी, ये छलिया छलता बरजोरी
एक दिना सखी सांकरी खोरी – चुनर झटकी बैयाँ मरोरी
बैयाँ छुड़ाके हाय दैया मैं दौड़ी। काला है .....

भजनः – 32

तूने ये क्या किया, मुझको धोखा दिया, हे मुरारी
ब्रज में व्याकुल है राधा तुम्हारी। तूने ये .....
तूने हम से कहा हम तुम्हारे, अब कहाँ गये वो वादे तुम्हारे
मन में कुब्जा बसी, जब से राधा तजी, हे मुरारी
ब्रज में व्याकुल है राधा तुम्हारी। तूने ये .....

श्याम अपना दिखाकर नजारा, फिर हमसे किया क्यों किनारा
क्या है मेरी खता, क्यों है बिसरा दिया, हे मुरारी
ब्रज में व्याकुल है राधा तुम्हारी। तूने ये .....
श्याम जब से गए फिर न आए, हमने लाखों संदेशे पठाये
जब से फेरी नजर फिर न देखा इधर, हे मुरारी
ब्रज में व्याकुल है राधा तुम्हारी। तूने ये .....
अब तो तुझ बिन जिया जाए ना, गम का विष ये पिया जाए न
तू बता क्या करूँ, मैं जिऊँ या मरूँ, हे मुरारी
ब्रज में व्याकुल है राधा तुम्हारी। तूने ये .....

भजनः – 33

कान्हा रे कान्हा! आजा अब आजा, मेरा दिल ये पुकारे आजा,
अखियों की प्यास बुझा जा, आजा रे दिवाने आजा,
मुझे अपना बनाने आजा। कान्हा ...
रोता है दिल और प्यासी ये अखियाँ, बाट निहारे, बाट निहारे,
मेरा ये जीवन सुन मेरे मोहना, तेरे हवाले – तेरे हवाले,
मेरी बिगड़ी बनाने आजा, राधा के प्यारे आजा,
आजा रे दिवाने आजा,मुझे अपना बनाने आजा। कान्हा ...

कहते हैं लोग मुझे कहती ये दुनिया,पागल दिवाना – 2,
प्रेम का मतलब इस दुनिया में, किसी ने ना जाना – 2
मतलब समझाने आजा, राधा के मोहन आजा,
आजा रे दिवाने आजा,मुझे अपना बनाने आजा। कान्हा ...

सम्भला हूँ मैं गिर गिर के कन्हैया, अब न गिराना – 2
मेरी गई तो जायेगी तेरी, हँसेगा जमाना – हँसेगा जमाना
अब प्रेम निभाने आजा, संतों के प्यारे आजा,
आजा रे दिवाने आजा, मुझे गले लगाने आजा। कान्हा.....

भजनः – 3 4

गिरिराज महाराज आज लाज तेरे हाथ
इन्द्र कोप से रक्षा कीजै, हा हा नाथ शरण में लीजै
ब्रजमण्डल प्रभु अब तो बह्यो जात, गिरिराज....
ब्रजजन गोधन व्याकुल भारी, चरण शरण हम आये तिहारी
तेरे बिना स्वामी हम हैं अनाथ, गिरिराज....
सात कोस की है परिक्रमा, यश गावें श्री विष्णु ब्रह्मा
एक सहारा है तेरा जगन्नाथ, गिरिराज....
सालिगराम रूप अवतारी, टारो विपदा नाथ हमारी
कहते हैं चरणों में रख करके माथ, गिरिराज....

भजनः – 3 5

छूटे दुनियाँ तो छूटे कोई गम नहीं,
तू अगर छूट जाये तो मर जायेंगे ।
झूठी दुनियाँ से हमने किनारा किया,
तू अगर रूठ जाये किधर जायेंगे ।।
नदिया गहरी प्रबल वेग तट दूर हो
चाहे तूफान बारिश भी भरपूर हो

चाहे नैया भँवर में फँसी है तो क्या
बन के केवट तू आया तो तर जायेंगे
अब तो जो भी करूँगा वो तेरे लिये
जीना तेरे लिये मरना तेरे लिये ।
मन कहेगा जो वो हमको करना नहीं
तू कहेगा जो भी हम वो कर जायेंगे
चाहे देकर दरश तू हँसादे हमे
चाहे देकर विरह तू रुलादे हमे
हँसना तेरे लिये रोना तेरे लिये
हँसते रोते यों ही दिन गुजर जायेंगे
दु:खकी अग्नि में हमको जलाते रहो
देके जी भर विपत्तियाँ तपाते रहो
दु:ख नहीं हम मनायेंगे ये मानकर
इसमें तो ओर भी हम निखर जायेंगे

भजनः – 36

श्यामा जे तू फड़ेंगा हथ मेरा, ताँ दुनिया दी लोड़ कोई ना
मेरे दिल विच जे तू ला लै डेरा, ताँ दुनिया दी लोड़ कोई ना
जे तू कवेंगा ताँ मैं दुनिया नू छड्डदाँ,
तेरे लई श्यामा वे मैं पावाँ चोला पगवाँ
नई होण दाँगी कल दा सवेरा, ताँ दुनिया दी .....
रो रो के किन्नियाँ मैं राताँ गुजार लइ
जिन्दड़ी गुजार देवाँ प्यारे तेरे प्यार लइ
नी मैं फड़ लित्ता पल्ला हुण तेरा, ताँ दुनिया दी .....

तेरे लइ पैराँ विच घुंघरू वी पावाँगी
नच नच गली गली तैनू मैं रिझावाँगी
बस इक बारी पाजा घर फेरा, ताँ दुनिया दी .....
श्याम तेरे उत्ते सारी खुशियाँ नूँ वारदाँ
तेरी खुश लइ मैं ताँ मन नूँ वी मारदाँ
तेरे बिन सारे जहान हनेरा, ताँ दुनिया दी .....

भजनः – 37

हे बिहारी मैं तुम्हारी मुझको अपना लीजिए
श्रीचरण की शरण आई देर न अब कीजिए
कितने जन्मोंसे न जाने दुनियाँको चाहती रही
मोह माया की धारा में रात दिन बहती रही
बहते बहते थक चुकी हूँ पार अब तो कीजिए
हे बिहारी....
तेरा गुण गाऊँ सदा मैं, तेरा जप चिंतन करूँ
अपना रक्षक शरण दाता एक बस तुमको वरूँ
ऐसा मेरा मन बना दो दाता यह वर दीजिए
हे बिहारी....
तुमको जो भावे वही मैं सोचूँ बोलूँ और करूँ
तेरी बन के तेरी इच्छाओं के ढाँचे में ढलूँ
करुणदास का करुणक्रन्दन सुनके करुणाकीजिए
हे बिहारी....

भजनः – 38

प्रभु जी कठपुतली मोहि बनाओ ।
तोड़ मोड़ अरु काट छांट के, अपने योग्य सजाओ
प्रभु जी कठपुतली ...
जो तू चाहे सोइ करू मैं, सोई सोचूँ बोलूँ
सोई देखूँ सुनू चखूँ मैं, कहो रोय तो रोलूँ
कहो हँसो तो हँसूँ रैन दिन,जो चाहे करवाओ
प्रभु जी कठपुतली ...
अपने मनकी करूँ कभीना, करूँ तिहारे मनकी
तेरी इच्छा में खो जाऊँ, सुध बुध भूलूँ तनकी
जो कछु मन में आय तिहारे, सोई नाच नचाओ
प्रभु जी कठपुतली ...
मन के पीछे चलते चलते, कल्प करोड़ों बीते
संत संग पाकर भी रह गये, हम रीते के रीते
करुणकथा सुन करुणदास की,अपनी शरण लगाओ
प्रभु जी कठपुतली ...

भजनः – 39

हे तारनहार कृपा कर,मोहे सद्‌गुरुसे मिलवा दे
मेरे जीवन की नैया, भवसागर पार लगा दे
फँसा पड़ा हूँ जग जंजाल में,जन्म मरण दुख माया जाल में
भटका मन कलियुग की चाल में, कैसे राह मिले इस हाल में
राह नहीं कोई सूझे चारों ओर अंधेरा
सद्‌गुरु सूरज बिना कभी ना होए सवेरा

संत मिला दे ऐसा जो तेरी राह चला दे, मेरे जीवन.....

संत संग बिन भक्ति नहीं होती,चाहे कोई लाख पड़े पोथी
गुरु बिन ज्ञान की जगे नहीं जोती,जीवात्मा ज्ञान बिना सोती
धर्म अर्थ नहीं काम न माँगू तुमसे मुक्ति
माँगू संत मिले तेरे मिलने की युक्ति,
तेरे चरणों तक पहुँचाये कोई ऐसा संत बतादे,मेरे जीवन.....

भजनः – 40

मेरे जैसे नैन श्याम सबको लगा दे
मुझे जो दिखाया वो सबको दिखा दे
कहने से कोई विश्वास न करेगा
छाती को चीर दिखाऊँ तो सरेगा
एक बार मुझको हनुमान तो बना दे, मुझे जो .....
अब तक जो संतों से तूने लिखाया
अनपढ़ बेचारा कुछ समझ न पाया
अनपढ़ भी पढ़े कुछ ऐसा लिखा दे, मुझे जो .....

भजनः – 41

मैं हुँ दीवाना तेरा, मैं हुँ दीवाना तेरा
मेरे घर में भी इक बार डाल दो डेरा
रात भर जागूँगा मैं तुमको न सोने दूँगा
जान देकर भी जुदा तुमको न होने दूँगा
तेरी रजा में जिंदगी का फैसला मेरा

दिल तड़फता है मेरा याद तुमको कर करके
थक गया हूँ मैं फरियाद तुमसे कर करके
मेरे दिल में भी इक बार डाल दो डेरा
कहीं दुनिया के लिये हो न जाऊँ मैं तमाशा
मुझे है आस तेरे मिलन की न हो निराशा
दर्दे दिल की इस रात का तू है सवेरा
तेरी राहों में बैठे हैं प्रभु पलकें बिछाये
जला है दीप आशा का कहीं ये बुझ न जाये
तेरे दीदार से मिट जायेगा, दिल का अंधेरा
प्यार कितना है दीवाना तुझे बता देगा
तुम्हारे नाम पर ये जिंदगी बिता देगा
दिल की दीवार पे लिखूँगा नाम मैं तेरा

भजनः – 42

तुम रूठे रहो नित मन मोहन, मैं गीत वियोग के गाती रहूँ
मुझे मेरी जवानी रोती रहे, मैं अंग विभूत रमाती रहूँ
खुले केश गले का हार बने, मुझे बावरी बावरी लागे कहें,
तेरी मूरत रखकर हृदय में, मैं प्रेम के पुष्प चढ़ाती रहूँ
तुम रूठे रहो .....
तेरे नैन मधुर जब मुस्कायें, तेरे नयनो में नयना खो जायें
अब नींद मुझे तड़फाती है फिर नींद को मैं तड़फाती रहूँ
तुम रूठे रहो .....
तुम प्राण हो प्रेमी के मनहर, इक गीत बने रहो होठों पे
मैं हाथ में प्रेम सितार लिये, घर घर में गीत सुनाती रहूँ
तुम रूठे रहो .....

भजनः – 43

देदे थोड़ा प्यार तेरा क्या घट जायेगा,
साँवरे सलोने मेरा काम बन जायेगा
मैंने सारा जीवन तेरी याद में गुजारा है
तेरा ही सहारा मुझे, तेरा ही सहारा है
थोड़ा जेया प्यार मेरी झोली पै जायेगा, साँवरे .....
तारते हो पापियों को, प्यार की निगाहों से
मेरा भी तो जीवन भरपूर है गुनाहों से
सुनोगे तो आप का कलेजा फट जायेगा, साँवरे .....
देते हो सभी को आज मैं भी लेकर जाऊँगा
झोली मेरी भर दे कान्हा, गीत तेरे गाऊँगा
आज ना भिखारी तेरे दर से खाली जायेगा, साँवरे .....

भजनः – 44

हे श्याम! तेरी बाँसुरी ने क्या गजब किया
सुधबुध गया मैं भूल तूने मन को मोह लिया
मुरली की मधुर तान सुनी प्रेम रस भरी
तज लोक लाज नारियाँ रटने लगी हरी
तन का रहा न होश तूने मन को मोह लिया। हे .....
नभ में खड़े हैं देव पुष्प हाथ में लिये
ऋषियों का टूटा ध्यान प्रेमभक्ति रस पिये
सब हो गये मदहोश तूने जादू क्या किया। हे .....

गैयों ने तजी घास पंछी मौन हो गये
यमुना का रुका नीर पवन लय में खो गये
सब हो गये खामोश तूने मन को मोह लिया। हे .....
ऐसी बजाई बाँसुरी त्रिलोक बस किया
शिव ने कैलाश छोड़ महारास रस लिया
देवों के देव कृष्ण ने सबको मगन किया। हे .....

भजनः – 45

हाय मेरा दिल नहीं लगता तेरे बिन दिल नहीं लगता
तेरे बिना दिलदार कि हाय मेरा .....
सपनों में आनेवाले, निंदीया चुराने वाले
मुझ को रुलाने वाले, रातों जगाने वाले
सांवरिया सरकार – तेरे बिन दिल .....
दर्शन को अखियाँ प्यासी, दिखला दो झलक जरा सी
सुन ले हो घट घट वासी, सुन ले हो ब्रज के वासी
ओ मेरे सरकार तेरे बिन दिल ......
ओ मोहन मुरली वाले, जीवन है तेरे हवाले
सुन ले ओ! दर्दे नाले, मुझको भी गला लगा ले
कर दो बेड़ा पार – तेरे बिना दिल .....
कहाँ छुप गये प्राणन प्यारे, भक्तों के नैनन तारे
कहाँ गये ब्रज के रखवाले, बाँसुरी बजाने वाले
जाऊँ कहाँ मेरे यार – तेरे बिन दिल .....

भजनः – 46

दीवाना हूँ तेरा कान्हा, दीवाना हूँ तेरा कान्हा
मुझे ज्यादा ना तड़फाना। दीवाना हूँ .....
कभी गोकुल में ढूँढू तुझे, वृन्दावन में ढूँढू तुझे
नंदगाँव में ढूँढू तुझे, गोवर्धन में ढूँढू तुझे
ढूँढ़ आया मैं बरसाना। दीवाना हूँ .....
अब तो कर दो दया की नजर,ठोकरें खा रहा दर बदर
एक तेरे ही दरके सिवा, और दुनिया में ना मेरा घर
मुझे दर से ना ठुकराना। दीवाना हूँ .....
हर तरह से तुम्हारे हैं हम, आप मानो न मानो मोहन
तेरे चरणों में निकलेगा दम, आप मानो न मानो मोहन
तुझको मैं ही क्यों बेगाना। दीवाना हूँ .....

भजनः – 47

कजरा बनके बस जा श्याम, आजा मोरी अखियन में
नैनों को खोलूँ तो तुझी को ही देखूँ,
झपकूँ पलक तो तुझी को ही देखूँ
तुझको देखूँ मैं आठों याम, आजा मोरी .....
मैं तो हुई श्याम तेरी दिवानी,
कह ना सकूँ मैं किसी से कहानी
मन के मन्दिर में गूंजे तेरा नाम, आजा मोरी .....
तेरे दर्श को तरसती है अखियाँ,
कर करके यादें बरसती हैं अखियाँ
तेरी मस्ती का झलके जाम, आजा मोरी .....

तू मेरा प्यारा – प्यारा मैं तेरा पागल
तिरछी नजर से है दिल मेरा घायल
तेरे दर पे खड़ा हूँ दिल थाम, आजा मोरी .....
कई कई जन्मों से दर्शन का प्यासा
तन मेरा प्यासा प्यासा मन मेरा प्यासा
तेरे चरणों का हूँ मैं गुलाम, आजा मोरी .....

भजनः – 48

तेरी अखियाँ हैं जादू भरी, बिहारी जी मैं कब से खड़ी
तुम सा ठाकुर ओर ना पाया, तुमसे ही मैंने नेह लगाया
मेरी टूटे ना भजन लड़ी, बिहारी जी मैं .....
सुन ले मेरे श्याम सलोना, तुमने मुझ पर किया है टोना
तेरी अखियों से अखियाँ लड़ी, बिहारी जी मैं .....
कृपा करो हरिदास के स्वामी, बाँके बिहारी मेरे अन्तर्यामी
मैं तो तेरे ही द्वार पड़ी, बिहारी जी मैं .....
तेरे नाम की जपूँ मैं माला, प्यारे पिला दो प्रेम का प्याला
मेरे चरणों में विनती करी, बिहारी जी मैं .....

भजनः – 49

मुरली बजाने वाले मेरी भी सुनते जाना
जो दर्द दे चले हो उसकी दवा बताना। मुरली .....
जब से सुनी है मैंने प्रभु बांसुरी तुम्हारी
बस में नहीं रहा है दिल हो गया दिवाना। मुरली .....
कुछ ऐसा दिल पे जादू मुरली ने कर दिया है
मैं भूल सा गया हूँ सब ठौर और ठिकाना। मुरली ....

होता गुजर जिधर से आती है नजर मुरली
गाली भी दे तो कोई मालूम देता गाना। मुरली .....
जाता हूँ घर अगर तो हर कोना गूंजता है
दिवारों से सुनाई देता वही तराना। मुरली ......
बेचैन हो रहा है हर प्राण बांसुरी को
तुमको कसम है मेरी इक बार फिर बजाना। मुरली .....

भजनः – 50

पाँव में घुँघरु बाँध के आई, मोहन मुरली वाले
नाचूँ गाऊँ नहीं थकूँ चाहे पाँवमें पड़ जाये छाले
मुरलिया नेक बजादे तू – चाहे फिर जितना नाच नचाले
जब तक तेरी मुरली बजेगी, तब तक मैं नाचूँगी
दुनिया इधर उधर हो जाये, प्रण अपना राखूँगी
तुमसे ना हारुँगी प्यारे, चाहे शर्त लगाले। मुरलिया ...
ना जाऊँ मैं गंगा काशी, ना कोई देव मनाऊँ
सारे तीर्थ छोड़ के मैं तो, प्रेम सरोवर नहाऊँ
अदला बदली दिलकी करले,नैंनसे नैंन मिलाले। मुरलिया ...
नहीं चाहिये दुनियाँकी शोहरत,न धनमाल खजाना
सारी खुशियाँ छोड़ के आई, एक तुझे बस पाना
हाथ पकड़ ले मोहन मेरा, आज मुझे अपनाले। मुरलिया ...
राधा नाचे मीरा नाचे, नाचे सखियाँ प्यारी
ऋषि मुनि और योगी नाचे, नाचे दुनियां सारी
करुणदास भी संगमें नाचे,भक्त सभी मतवाले। मुरलिया ...

भजनः – 51

बोलूँ करूँ या कुछ भी विचारुँ, तेरे लिये हो सब श्याम प्यारे
तेरी खुशी में सुख हो हमारा, ऐसा बना दो मन श्याम प्यारे
भक्ती की ज्योति ऐसी जगा दो, हो जाय मेरे दिल में उजाला
नैना सभी में तुमको निहारे, ऐसा बना दो ....
जिह्वा जपे नाम सदा तुम्हारा, खाली न जाये इक श्वाँस मेरा
गोविन्द गोपाल रटे पुकारे, ऐसा बना दो ....
प्रीती तुम्हारी चित में बसाऊँ, तेरे सिवा कोइ मुझे न भाये
देखूँ कभी ना जग के इशारे, ऐसा बना दो ....

भजनः – 52

तेरा नाम सदा मुख आए,प्रभुजी ऐसी कृपा करो
एकपल भी व्यर्थ न जाए,प्रभुजी ऐसी कृपा करो
दुनिया की परवाह न होए, तेरे बिना कोई चाह न होए
एक तू ही मन को भाए, प्रभु जी ऐसी....
सभी मुसाफिर जगत सराए, एक पल आए एक पल जाए
एक तू आके न जाए, प्रभु जी ऐसी....
स्वाँस स्वाँस तेरा नाम उचारूँ, रैन दिना बस तुझे पुकारूँ
एक तुझ बिन चैन न आए, प्रभु जी ऐसी....
मेरापन हट जाए जगत से, जुड़ जाए श्री चरणकमल से
ये तेरा दास कहाए, प्रभु जी ऐसी....
करुणदास कहे सुनो हमारी, भूल जाऊँ सब दुनियादारी
बस तेरी ही याद रूलाए, प्रभु जी ऐसी....

भजनः – 53

तेरे मन्दिर में आना मेरा काम है मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है
आया मन्दिर में तज करके माया सभी
पर माया ने छोड़ा ना मुझको अभी
तीन फाँसों को लेकर ये पीछे पड़ी
मेरा पीछा छुड़ाना तेरा काम है
भेजा राणा ने भर प्याला विष घोलकर
पिया मीरा ने विष को हरि बोल कर
नाम जपना प्रभु ये मेरा काम है
विष को अमृत बनाना तेरा काम है
मेरे जीवन की नैया भंवर में फँसी
यह मेरी नहीं है ये तेरी हँसी
हमें तेरे ही नाम की फेंट कसी
पार नैया लगाना तेरा काम है
आया द्वारे पे जग के बन्धन तोड़कर
क्यों बैठे हो मन्दिर में मुख मोड़कर
कहाँ जाऊँ मैं प्यारे तुम्हें छोड़कर
मैं तो आया निभाना तेरा काम है

भजनः – 54

तू पंख लगादे श्याम मुझे, उड़ अभी बिरज में आऊँ
श्री गोवर्धन बरसाना, वृन्दावन दर्शन पाऊँ
श्री राधाकुण्ड मानसिगंगा, न्हाके कर लूँ तन मन चंगा
गोवर्धन परिक्रमा करके, मनवांछित फल पाऊँ
तू पंख लगादे श्याम मुझे, उड़ अभी बिरज में आऊँ

बरसाना वृषभानु दुलारी, जिसकी ऊँची बनी अटारी
राधा रानी के दर्शन कर, जीवन सफल बनाऊँ
तू पंख लगादे श्याम मुझे, उड़ अभी बिरज में आऊँ
वृन्दावन में बाँके बिहारी, राधावल्लभ झाँकी प्यारी
देख-देखके रूप छटा, नैनों की प्यास बुझाऊँ
तू पंख लगादे श्याम मुझे, उड़ अभी बिरज में आऊँ
जो तुम मन की आस पुजाओ, ब्रज वृन्दावन मुझे बसाओ
आठोंयाम करूँगा सेवा, करुण दास बलि जाऊँ
तू पंख लगादे श्याम मुझे, उड़ अभी बिरज में आऊँ

भजनः – 55

दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया
दिल मेरा लुटिया ते हाय मार सुटिया
मैं तेरे जोगा रह गया, दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया
जदों मुरली तेरी बजदी नी, आके सीने दे विच लगदी नी
मेरा कड कलेजा भजदी नी, दिल धक् धक् करदा रह गया
दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया
पहलां दिलबर दिल लूट गया, फिर माल खजाना छूट गया
फिर कुणबा सारा रूठ गया, भट्टा बैंहदा बैंहदा बैह गया
दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया
तेरे प्रेमदी तरखड़ी तुल बैठा, घर बार भी अपना भुल बैठा
दिल तेरे उत्ते डुल बैठा, आई लव यू लव यू कह गया
दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया
तेरा नाम मैं जपदा रैंहदा नी, हरे रामा कृष्णा कैंहदा नी
सारी दुनिया दी भी सैंहदा नी, दिल रोंदा रोंदा कह गया
दिल लुटिया कन्हैया ने पवाड़ा पै गया

भजनः – 56

श्याम तेरे नैना जुल्म कर डारे।
बड़े कँटीले बेदर्दी ये, चोट जिगर पर मारे
मद से भरे नशीले दोऊ, देखें सो मतवारे
आतम सुख भोगी योगिन की, लगी समाधी टारे
निर्मोही में मोह जगावैं, दृग बाँके कजरारे
धीरवान को धीरज छूटै, देख नयन रतनारे
जो देखें इन अँखियन माहीं, अँसुअन बहत पनारे
करुणदास बेचैन रहत नित,अति घायल हियरारे

भजनः – 57

छोड़ूँगी न मैं तुम्हें छोड़ूँगी न मैं,
जग सारा छोड़ूँ तुम्हें छोड़ूँगी न मैं, भूलूँगी न मैं तेरा नाम
मर जाऊँगी – मिट जाऊँगी, हो जाऊँ चाहे बदनाम। मेरे श्याम
छोड़ूँगी न मैं....
जहर का प्याला पीना पड़े, रो रो के चाहे जीना पड़े
सबको सहूँगी – रह ना सकूँगी, तेरे बिना एक याम। मेरे श्याम
छोड़ूँगी न मैं....
कांटो पे चाहे चलना पड़े,अग्निमें चाहे जलना पड़े
नाही डरूँगी – होके रहूँगी, मैं दासी बिन दाम। मेरे श्याम
छोड़ूँगी न मैं....
कैसी दीवानी मैं हो गई,तू ही रहा और मैं खो गई
मैं और मेरा – कुछ ना रहा है, हो गया तेरे नाम। मेरे श्याम
छोड़ूँगी न मैं....
तेरे बिना कुछ चाह नहीं,दुनिया की परवाह नहीं
कोई रुठे – चाहे छूटे, छूटे चाहे धन धाम। मेरे श्याम
छोड़ूँगी न मैं....

भजनः – 58

अजब तेरी कारागिरि भगवान् ।
अपने जैसा बना दिया है, मिट्टी से इन्सान
अपनी सारी शक्तियाँ भर दी, इस मानव के अन्दर
आप भी छुप के बैठ गया है, इसे बनाके मन्दिर
सब ब्रह्माण्ड समाया इसमें, फिर भी ये अन्जान
अजब तेरी कारागिरि भगवान्
वेद पुराण रामायण गीता, सब यह भेद बतायें
ऋषि मुनि ग्रन्थ देवता सारे, इसकी महिमा गायें
गुर बिन भेद समझ नहीं आये, पढ़ पढ़ थके पुरान
अजब तेरी कारागिरि भगवान्
लीलाधर की अद्भुत लीला, पार नहीं कोइ पाया
फँसे मोह माया में सारे, कैसा जाल बिछाया
करुण दास इस माया मोह से, तारे भक्ति ज्ञान
अजब तेरी कारागिरि भगवान्

भजनः – 59

अरे दिल गाफिल! लौट चला आ, अब घर वापिस जाना है ।
जन्म जन्म से राह भटकता, घरघर दरदर सीस पटकता
कहाँ कहाँ तू जाये अटकता, मिले न ठौर ठिकाना है । अरे ....
मिलके बिछुड़ना पाकर खोना, रीति यहाँ ये सब सँग होना
फिर काहे को रोना धोना, काहे को ललचाना है । अरे ....
रंक रहे नहिं राजा रानी, रह जायेगी कर्म कहानी
ये दुनिया है आनी जानी, फिर मन क्यों भटकाना है । अरे ....
नहिं बिछुड़े जो एकहि साथी, ईश्वर वर सब जगत बाराती
करुण दास जप कर दिन राती, जो सुख चाहे पाना है । अरे ....

भजनः – 60

आ मेरे मन गोवर्धन, कर दे तु सर्वस अर्पन
खुशियों का फिर फूल खिलेगा, महकेगा जीवन उपवन
आ मेरे मन....
मानसी गंगा गोविन्द कुण्ड, आय नहा ले राधा कुण्ड
ब्रजरज को निज शीश चढ़ाके,करले तन और मन पावन
आ मेरे मन....
गिरिराज परिक्रमा कर, कृपा करेंगे श्री गिरिधर
तेरे सारे दुःख हरेंगे, गिरिधारी हैं दुःख हरण
आ मेरे मन....
दूध की धार चढ़ा ले तू, छप्पन भोग लगा ले तू
भक्ति भाव से पान पुष्प ले, कर ले आ इनका पूजन
आ मेरे मन....
गिरिराज में जो आते, मुहमाँगा वो फल पाते
करुणदास गिरिराज चरणमें, करले तू इक बार नमन
आ मेरे मन....

भजनः – 61

कर तन मन धन अर्पन चला आ गोवर्धन
तुझे मिलेंगे मन मोहन चला आ गोवर्धन
आ के एक परिक्रमा कर ले, भव सागर से पार उतरले
खुशियों की तू झोली भर ले, तू हो के प्रेम मगन
चला आ गोवर्धन

मानसी गंगा में तू न्हाले, गिरिराज पे दूध चढ़ाले
मिश्री पेड़ा भोग लगाले, बस कर ले थोड़ा यतन।
चला आ गोवर्धन
एक बार गोवर्धन आ जा, इनका बन इन्हें अपना बनाजा
शरण में आ जीवन फल पा जा, फिर होगा प्रेम मिलन।
चला आ गोवर्धन
बार बार गोवर्धन आना, नियम लिया जो उसे निभाना
नहीं करना फिर कोई बहाना, गाये करुणा दास भजन।
चला आ गोवर्धन

भजनः – 62

ईश्वर अल्लाह वाहे गुरु, चाहे बोलो श्रीराम
मालिक सबका एक है, अलग अलग हैं नाम
सबसे प्रभु का एक सा नाता, वही पिता है वो ही माता
मंदिर मस्जिद या गिरिजाघर, सभी प्रभु के धाम
मालिक सबका एक है अलग अलग हैं नाम
गीता बाइबल या कुरान है, उस मालिक का सबमें गान है
सबका प्यारा सदा बनाता, सबके बिगड़े काम
मालिक सबका एक है अलग अलग हैं नाम
सब धर्मों को प्रेम सिखाता, सबको सच्ची राह दिखाता
दूर किया करता है दाता, सबके कष्ट तमाम
मालिक सबका एक है अलग अलग हैं नाम

भजनः – 63

गया बीत जीवन पर जीना न आया,
रसामृत मिला पर वो पीना न आया।
मन को मनाने की कोशिश बहुत की,
पर मेरे बस मन कमीना न आया। रसामृत ......
कर कर दगा कितनों के दिल हैं तोड़े,
तोड़े बहुत एक भी सीना न आया। रसामृत ......
लहू तक बहाया है अपने लिये तो,
दूजे के खातिर पसीना न आया। रसामृत ......
किये संत दर्शन वचन भी सुने हैं,
संतों के होना आधीना न आया। रसामृत ......
मन्दिर में जा पूजा भक्ति बहुत की,
करुण दास होना लवलीना न आया। रसामृत ......

भजनः – 64

जिस घर को हम कभी छोड़ते नहीं,जाने पर फिर क्यों लौटते नहीं

कहते थे मेरे बिन घर न चलेगा, बोले बिना कोई काम न करेगा
चुपचाप लेटे क्यों बोलते नहीं, जाने पर ....

मेरी दुकान मेरा घर परिवारा, कहते थे देखे बिन नहीं है गुजारा
अब बंद नैना क्यों खोलते नहीं, जाने पर ....

पल भर चैन से बैठ न पाया, भाग दौड़ में हरि को भुलाया
पड़े आराम से क्यों दौड़ते नहीं, जाने पर ....

आनी जानी दुनिया से सबको ही जाना,
फिर भी तू दुनिया का बना है दिवाना
इतनी सी बात क्यों सोचते नहीं, जाने पर ....

भजनः – 65

जब तक संत शरण नहीं आये, तब तक मन भरमाये
मरम कोइ समझ न पाये, धरम कोइ समझ न पाये

सिया खोज में अंतर्यामी, क्यों वन–वन में भटके
विरह दुःख में आनँदघन के, क्यों दृग आँसू टपके
त्याग दिया क्यों सीता जी को, क्यों सिय भूमि समाये
मरम कोइ समझ न पाये, धरम कोइ समझ न पाये
छुप के बाली मारा क्यों नारी पे बाण चलाया
नाग फाँस में बँधे राम क्यों निज भुज बल बिसराया
बन अन्जान क्यों कपटी मृग के, पीछे–पीछे धाये
मरम कोइ समझ न पाये, धरम कोइ समझ न पाये
गोवर्धन धर इन्द्रदेव का, बड़ अहंकार मिटाया
कंस पूतना शिशुपाल को, पल में मार गिराया
कालयवन से भागे फिर क्यों प्रभु रणछोड़ कहाये
मरम कोइ समझ न पाये, धरम कोइ समझ न पाये
धर्म हेतु अवतार धार प्रभु, धर्म सुरक्षा करते
करुण दास हरि धर्म रूप हैं, धर्म त्याग नहिं करते
फिर क्यों झूठ कपट छल चोरी, पर तिय रास रचाये
मरम कोइ समझ न पाये, धरम कोइ समझ न पाये

भजनः – 66

जिस दिनको भूला उम्र भर आएगा जब वो दिन
तू होगा सबके बिन और सब होंगे तेरे बिन
दिन रात जोड़ जोड़ के भर ले खजाना तू
आएगा जब बुलावा छिन में जाएगा छिन
जिस दिन को....

पुण्यों का फल तू चाहता पापों को भूलकर
तेरे वो भी साथ जाऐंगे उनको भी ले तू गिन
जिस दिन को....
अब भी समय है चेत जा सत्संग से ज्ञान ले
करके भजन उतार ले सिर पे चढ़ा जो ऋण
जिस दिन को....

भजनः – 67

किसीको रामायण किसीको वेद भाया है
हमें गीता माता से अनोखा ज्ञान पाया है
जय हो गीता माता की, जय हो....
जो भी माँ की शरणमें आया,उसको माँने भक्त बनाया
अपनी गोद बिठाकर माँ ने, प्रेम का गीत सिखाया
हरि पद प्रेम दान कर उसका, जीवन सफल बनाया है
जय हो गीता माता की, जय हो....
सकल शास्त्र की स्वामिनी माता, श्रुतियों की तू है रानी
अर्जुन को जब मोह ने घेरा,बन गई हरि मुख की बानी
दया सुधा बरसाने वाली, में सब वेद समाया है
जय हो गीता माता की, जय हो....
दस भुजी पंचाननी माता, एक उदर दो चरण तेरे
बने अष्ट दस अध्याय हैं, अष्टादस माँ अंग तेरे
करुणदास की करुणा मूर्ति में सब ज्ञान समाया है
जय हो गीता माता की, जय हो....

भजनः – 68

जपके तू देखवले माला से नाम,
सबसे सरल उपाय भजन का, जप लों आठों याम
जपके तू देखवले माला से नाम
मणके मण के से तू, करता जा नाम का जाप
पाप कर्म से बचता चल, हरि आए मिलेंगे आप
जन्म मरण की कटे चौरासी, मिल जाए विश्राम
जपके तू देखवले माला से नाम
जो तू फेरे माला, तो होगा माला माल
बिना भजनके हर प्राणी है, अंत समय कंगाल
राम नाम धन साथ चलेगा, होंगे पूर्ण काम
जपके तू देखवले माला से नाम
माला से जप करना, और नियम कभी न तोड़
चुक न जाना राम नाम धन, रोज रोज तू जोड़
सच्चा सौदा कर ले रे प्राणी, कोड़ी लगे न दाम
जपके तू देखवले माला से नाम
चंचल मन नहीं टिकता, तू क्यों होता उदास
हरि नाम जिह्वा से जप ले, पहुँचोगे प्रभु पास
करुणदास हरिनामसे कितने, पहुँचे हरिके धाम
जपके तू देखवले माला से नाम

भजनः – 69

जब से आई हाथोंमें तुलसीकी माला
हुआ मतवाला मैं हुआ मतवाला
तब से मेरे मन में बसा मुरली वाला। हुआ मतवाला....
कोई कहे ढोंगी चाहे पारवण्डी
सत्‌गुरु ने चलने को दी पगडण्डी
और कहा बढ़ता चल पीके प्रेम प्याला। हुआ मतवाला....
कलियुग में ज्ञानयोग ध्यान नहीं होता
बिना नाम जप के उद्धार नहीं होता
जप ने किया आज मेरे मन में उजाला। हुआ मतवाला....
जबतक मैं दुनियांको चाहता रहा हूँ
धोरवे पे धोरवा मैं रवाता रहा हूँ
अब तो इस चाहतको दिलसे मिटा डाला। हुआ मतवाला....
दिल में बसा है वो मेरा सिर ताज है
फिर चिंता क्या जब वो मेरा रखवाला। हुआ मतवाला....

भजनः – 70

माला तुलसीकी जपे जो भव तर जाए
जो कोई नहीं जपता चौरासी भरमाए
येही माला सतगुरु नानक जपी अमरपद पाया
नाम खुमारी चढ़ी रात दिन रोम रोम रस छाया
माला कारण सत्‌गुरु तेगबहादुर शीश कटाए....
इस को जप कर हनुमान ने हृदय राम बसाया
चीर के छाती भरी सभा में सबको राम दिखाया
रोम रोम में पवन पुत्र के राम ही राम समाए....

नवग्रह बारह राशियोंका गुणनफल एक सौ आठ
तुलसी माला में भी मणके पूरे एक सौ आठ
माला जपने वालों की राशि पर ग्रह न आए....
मुस्लिम तस्बीह बौद्ध थेंगवा सिक्ख कहें सिमरनी
करुण दास कहे तुलसी माला है भवसागर तरनी
जो भी इसका जाप करे ये उन्हें पार पहुँचाए....

भजनः – 71

तुलसी की मालासे जाप करो रे
अपना उद्धार स्वयं आप करो रे
मुखमें गर रामनाम माला हाथ में
तू अकेला नहीं राम तेरे साथ में
मणके से मन का संताप हरो रे, अपना उद्धार....
ब्रह्मा शिव हनुमत भी जपते सदा
राम नाम माला से रटते सदा
माला से जाप दिन रात करो रे, अपना उद्धार....
हाथोंसे जब कोई काम ना करो
माला जपो रे विश्राम ना करो
माला बिना नहीं बात करो रे, अपना उद्धार....
माला गर फेरने में शर्म करोगे
अनाथ की तरह बेमौत मरोगे
आत्मा का आप ही क्यों घात करो रे, अपना उद्धार....
करुण पुकारे अंधेर न करो
बेला मिलन की है देर न करो
अपने प्रभु से मुलाकात करो रे, अपना उद्धार....

भजनः – 72

नाम जपो लेकर माला, हो जाय जीवन आला
जन्म जन्म के दुःख मिटेंगे, मिल जाये मुरली वाला
मूर्ख मनवा सोच विचार, नर तन मिले ना बारम्बार
अबकी बारी चूक गया तो,पड़ेगा फिर यमसे पाला
नाम जपो लेकर माला, हो जाय जीवन आला
सच्ची सीख गुरु की मान, नाम जपो और बनो महान
हरिनाम को जपते – जपते,मिट जायेगा भ्रम जाला
नाम जपो लेकर माला, हो जाय जीवन आला
क्यों करता है चित्त उदास, राम नाम जब तेरे पास
वो ही तेरी फिकर करेगा,भक्तों का जो रखवाला
नाम जपो लेकर माला, हो जाय जीवन आला
मीरा तुलसी नरसी जी, मस्त हुए नामामृत पी
करुणदास भी इसको पीकर,हो गया देखो मतवाला
नाम जपो लेकर माला, हो जाय जीवन आला

भजनः – 73

माथे तिलक गले में कंठी माला हाथ उठाओ
नाम हरि जपो जपाओ
भगती करके इसी जन्म में भवसागर तर जाओ
नाम हरि जपो जपाओ
गुरु से कंठी धारण की और माथे तिलक लगाया
वैष्णवों भेष लिया जिसने वो हरि का दास कहाया
कीर्तन करो कराओ सबसे, तारन तरन कहाओ
नाम हरि जपो जपाओ

दीन दुखी की सेवा करना, मन अभिमान न आये
दायें हाथ से दिया जो तूने, बायाँ जान न पाये
पाप कर्म से बचकर प्राणी, पुण्य कर्म कमाओ
नाम हरि जपो जपाओ
सत्संग कथा जाप कीर्तन कर, श्रीसद्गुरु की सेवा
हर में हरि बसे हैं सबको, दिल से मानो देवा
मान करो पर मान न चाहो, सबको शीश झुकाओ
नाम हरि जपो जपाओ.....

भजनः – 74

तेरी बिगड़ी सब बन जाई, भजन में देर न कर मेरे भाई
जरा कर ले नेक कमाई। भजन में देर....
सारे काम तू आजही करता,भजनको छोड़े कल पे
कल जाने आए ना आए,पत्त्थर पड़े अकल पे
कल है काल का नाम रे प्राणी, ये बात समझ न आई ।
भजन में देर....
आज है तेरे हाथ में प्राणी, कल क्या जाने होय
कितनी स्वाँसा मिली है किसको,जान सका न कोय
कल कल करते बीती उमर, कल आज तलक न आई।
भजन में देर....
प्रेम नगर में कब से प्रियतम, बाट निहारे तेरी
बाँह उठाए मिलनको आतुर,करता क्यों अब देरी
पल पल आयु ढ़लती जाए, भज ले तू कृष्ण कन्हाई।
भजन में देर....

भजनः – 75

तोड़कर सारे बन्धन तू आजा शरण, जपो राधारमण रटो राधारमण
तब ही होगा तुम्हारे दु:खों का हरण, जपो राधारमण रटो राधारमण
हिरण्यकश्यप थका कुछभी कर ना सका
किये सारे यतन भक्त मर ना सका
नाम का आसरा हो फिर कैसा मरण। जपो राधारमण ...
सोई काँटों की सेजों पे पीया जहर
मीरा पे ढाये हैं कैसे कैसे कहर
नाम जपती रही होके प्रेम मगन। जपो राधारमण ...
तुलसी नरसी कबीरा रविदास जी
नामजप ने की इनकी पूरी आस जी
नाम से तर गये हैं कसाई सदन। जपो राधारमण ...
नाम जिसने जपा पार वो हो गया
नामकी मस्तीमें फिर तो वो खो गया
गुरु कृपा से मिलता है सच्चा रतन। जपो राधारमण ...
मौत जब आयेगी साथ जायेगा क्या
नामको छोड़कर फिर तू पायेगा क्या
इसलिये सबको कहता हूँ करलो भजन। जपो राधारमण ...

भजनः – 76

करले भजन तू करले भजन, होके मगन तू कर ले भजन
करके यतन जपो नाम।
नियम न टूटे – चाहे सब छूटे,
बिगड़े बनेंगे सब काम, जपो नाम। कर ले भजन....
एक भी स्वाँसको व्यर्थ न खो
स्वाँस स्वाँस हरि नाम जपो

स्वाँसों के मनके – जप ले यतन से
कर ले भजन आठों याम, जपो नाम। कर ले भजन....
जगने की बेला में क्यों रहा है सो
फूलों की जगह अब कांटे न बो
दुनिया से जाएगा – फिर पछताएगा
माया का न बन तू गुलाम, जपो नाम। कर ले भजन....
पिछले करम को तू अब रहा ढो
हाय हाय करके तू अब रहा रो
अब भी सँभल जा – ऐसा कुछ कर जा
आत्मा को मिले विश्राम, जपो नाम। कर ले भजन....
दीन दुखियों को खुशियाँ दो
हरि का समझ कर चल सबको
सबके अन्दर – हैं श्यामसुन्दर
सबको तू कर ले प्रणाम, जपो नाम। कर ले भजन....

भजनः – 77

कितने भव पार हुए, ले तेरा नाम ।
भक्तोंकी तो बात छोड़दो, पापी तरे तमाम ।।
पापी एक अजामिल, थे गंदे संस्कार
आमिष भोजी सुरापान कर,करता अत्याचार
अंतकाल हरि नाम लिया तो,बन गये बिगड़े काम
कितने भव पार....
पापिनि नारि गणिका,थी करती देह व्यापार
राम नाम तोते के मुख से, सुनती बारम्बार
मरते मरते राम नाम सुन, पहुँची हरि के धाम
कितने भव पार....

ऐक था सदन कसाई, करता था माँस व्यापार
सालिग्राम से माँस तोलता, हृदय में था प्यार
प्रकट प्रभु के दर्शन पाये, जगन्नाथपुरी धाम
कितने भव पार....

डाकू चोर लूटेरा, था घाटम जिसका नाम
संत कृपा से हरि नाम को,जपता आठोंयाम
डाका चोरी लूट छूट गई, आय मिले घनश्याम
कितने भव पार....

गीध जटायू भालू, कपि कागभुशुण्डी नाग
जाति कुजाति पार हो गये,रामचरण अनुराग
करुण दास जो नाम हैं जपते,उनको करूँ प्रणाम
कितने भव पार....

भजनः – 78

श्वाँसा छूट गई तो सोचो, तेरे सँग कौन चलेगा मनवा ।
राम भजन कर चूक न जाना, यही तेरे सँग चलेगा मनवा ।।
तू कहता है मेरा मेरा, पल में उठ जायेगा डेरा
किसपे तू हाथ धरेगा मनवा, तेरे सँग ....
दान पुण्य तू कर नहीं पाता, कर कर पाप भरा है खाता
इकला ही पाप भरेगा मनवा, तेरे सँग ....
धरमराज जब खाता खोले, तेरे पाप पुण्य सब तोले
मरके भी फिर तू मरेगा मनवा, तेरे सँग ....
पहले नरक में दुख पायेगा, लाख चौरासी फिर जायेगा
नयनन नीर डरेगा मनवा, तेरे सँग ....
करुण दास की बात मान ले, भव तरने की युक्ति जान ले
फिर तेरा काम बनेगा मनवा, तेरे सँग ....

भजनः – 79

नाम हरि का जप ले बंदे, फिर पीछे पछतायेगा
तू कहता मेरी काया, काया का अभिमान है क्या,
चाँद सा सुन्दर ये तन तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा
मिट्टी में मिल जायेगा। नाम हरि का.....
बालापन तो खेल गँवाया, आई जवानी मस्त रहा,
बूढ़ापन में रोग सताये, खाट पड़ा पछतायेगा,
खाट पड़ा पछतायेगा। नाम हरि का.....
क्या लेकर तू आया जगत में, क्या लेकर तू जायेगा
मुट्ठी बाँधे आया जगत में, हाथ पसारे जायेगा
हाथ पसारे जायेगा। नाम हरि का.....
कंचन जैसी काया तेरी, तुरत जला दी जायेगी
जिस नारी से नेह घनेरा, वो भी साथ न जायेगी
एक मास तक याद करेगी, फिर तू याद न आयेगा
फिर तू याद न आयेगा। नाम हरि का.....
क्या राजा क्या संत गृहस्थी, सबको एक दिन जाना है,
आँख खोल कर देख बावरे, जगत मुसाफिर खाना है
कोई न तेरे साथ चलेगा, काल तूझे खा जायेगा,
काल तूझे खा जायेगा। नाम हरि का.....
जपना है तो जपले बंदे, आखिर तो मिट जायेगा,
कहत कबीर सुनो भई साधो, करनी का फल पायेगा,
सिर धुन-धुन पछतायेगा। नाम हरि का.....

भजनः – ८०

राम नाम जाप कर, भूल के ना पाप कर
पाप त्याग कर अगर तू जाप करेगा
और अपना सुधार स्वयं आप करेगा
तो एक दिन प्रभु से मुलाकात करेगा
राम नाम जाप कर....
हरि नाम जपते जपते, सब काम करना सीखो
मन को मिले आराम, थोड़ा ध्यान करना सीखो
हर वक्त ना करो तो, सुबह शाम करना सीखो
जीवन निहाल होगा – पल में कमाल होगा
राम नाम जाप कर....
हरि नाम के सहारे, कितने हुए किनारे
वो जीत गये बाजी, जो जिंदगी से हारे
तू क्यों उदास होता, ले नाम उसका प्यारे
तेरा उद्धार होगा – तू भी तो पार होगा
राम नाम जाप कर....
कईं जन्म यूँ ही खोये, इस बार जप के देखो
हर बार पाप बोए, इस बार बच के देखो
कहे करुणदास साँची, अब आजमाके देखो
कितनों ने आजमाया – अब तू भी आजमाले
राम नाम जाप कर....

भजनः – 81

रसना लगा रटना सदा हरि नाम की
नाम के बिन जिंदगी किस काम की
महिमा अनंत सब कहें संत, नहीं पार किसी ने पाया है,
सद्ग्रन्थों ने यश गाया है
है ज्ञान यही, भगवान् यही, जप में कर झाँकी श्याम की,
नाम के बिन ....
हरि नाम बोल, मुख ले तू खोल, नहीं लगता मोल तुम्हारा है,
भक्तों का यही सहारा है
बस हो के मगन कर ले तू भजन, यदि चाहत है विश्राम की,
नाम के बिन ....
कहे करुण दास, धरती आकाश,कहीं जाय भजन बिन रोयेगा,
पापों का बोझा ढोयेगा
है नरक यहीं और स्वर्ग यहीं, यहीं झाँकी हरि के धाम की
नाम के बिन ....

भजनः – 82

हरि बोल हरि हरि बोल मन ले आसरा हरि नाम का
प्रति श्वाँस कर हरि नाम जप बिन नाम तू किस काम का
भारत थली सतसंग नर तन देव दुरलभ योग सों
लै लाभ करि कछु यतन छूटहु अति कठिन भवरोग सों
आहार मैथुन शयन सुत परिवार तो पशुहू कियो
नर देह धरि हरि नहि भज्यौ मानुष जनम काहे लियो
अब भटक मत नहिं देर कर पल – पल समय बहु कीमती
हरि नाम बिन इक श्वाँस हूँ निकसे समझ निज बहु छती
जो कछु मिल्यौ विनसै सबै, तनहू सगा नहिं मान लै
कह करुण दास सगा सनेही एक श्रीहरि जान लै

भजनः – 83

तीन बार भोजन भजन एक बार
इसमें भी आते हैं झंझट हजार
मन मेरा कहता है गंगा नहाऊँ,
गंगा नहाऊँ जाके यमुना नहाऊँ
जाते–जाते रस्ते में चढ़ गया बुखार
मन मेरा कहता है दान कर आऊँ
दान कर आऊँ कुछ पुण्य कर आऊँ
महँगाई ज्यादा बड़ा है परिवार
मन मेरा कहता है माला जप आऊँ
माला जप आऊँ भजन कर आऊँ
लेते ही माला आये रिश्तेदार
मन मेरा कहता वृन्दावन जाऊँ
बाँके बिहारी के दर्शन पाऊँ
जाते जाते मन्दिर के लग गये किवाड़
मन मेरा कहता गोवर्धन जाऊँ
जा करके एक परिक्रमा लगाऊँ
चलते चलते टांगे ये हो गई लाचार
मन मेरा कहता है बरसाने जाऊँ
श्रीराधा रानी के दर्शन पाऊँ
हार गई सीढ़ी मैं चढ़के दो चार
मन मेरा कहता है कुछ न करूँ मैं
कुछ न करूँ बस मौज करूँ मैं
सहनी पड़ेगी यमदूतों की मार

सबसे सरल है गुरु को रिझाना
गुरु को रिझाना गुरु को मनाना
मिले जब गुरु तो करूँ नमस्कार
इतने से मिलता है गुरुवर का प्यार

भजनः – 84

ये जिंदगी धोखवा दे जाएगी, तू कर ले भजन हरि का
तेरे मन की मन में रह जाएगी,तू करले भजन हरि का
जोड़ जोड़ जो रखी है माया, जिसको देख देख भरमाया
ये पानी जैसे बह जाएगी, तू कर ले .....
तेरी कोठी तेरी हवेली, बल जाएगी एक पहेली
ये खड़ी यहीं पे रह जाएगी, तू कर ले .....
सदा रहे न योवन छाया, मिट्‌टी की है तेरी काया
ये पल दो पल में ढह जाएगी, तू कर ले .....
भजन करन का यही है मौका, इस जीवन का नहीं भरोसा
इसे मौत उठा ले जाएगी, तू कर ले .....

भजनः – 85

कोई पीवे संत सुजान राम रस मीठा है
राज वंश की रानी पी गई एक बूंद इस रस का
आधी रात महल तज चलदी रहा न मनुवा बस का
गिरधर की दीवानी मीरा ध्यान छूटा अपयश का
बन – बन डोले श्याम बावरी लगा नाम का चसका
कोइ पीवे संत .....

नामदेव रस पिया अनुपम सफल बना ली काया
नरसी का इकतारा कैसे जगतपिता को भाया
तुलसी सूर फिरे मदमाते रोम – रोम रस छाया
भर – भर पी गई ब्रज पनिहारी सुन्दरतम पी पाया
कोई पीवे संत सुजान .....

ऐसा पी गया संत कबीरा मनहर पीछे डोले
कृष्ण – कृष्ण जय कृष्ण – कृष्ण नस नस अर्जुन की बोले
चारव हरि रस मगन नाचत शुक नारद शिव भोले
यह रस है अनमोल हृदय पट खोल नाम से धोले
कोई पीवे संत सुजान .....

भजनः – 86

नैनन में मोरे मदन गोपाल समायो
जित देखूँ तित वो ही दीखै, कैसो रोग लगायो
सखी यमुना के तट, बंशीवट के निकट
नटखट यूँ झपट, झट मटकी गिराये
सखी देख नटखट, मैं चली झटपट
पाँव गयो है रिपट, तन सँभल न पाये
गिरते गिरते पकर लई याने, नैन सों नैन मिलायो . . . .
मेरी मटकी पटक, दही खाई सटासट
मैं निहारूँ टकाटक, कछु समझ न आये
सारो दहिया सटक, मेरी बहियाँ झटक
चल्यौ मटक मटक, मेरी मति भरमाये
घुंघट पट झट खोल के याने, मेरो चित्त चुरायो . . . .

गई हिय में खटक, घर होगी खटपट
पाँव गयो है अटक, आगे धर्‌यो ही न जाये
गयौ मुँह भी लटक, उरझी सब लट
बात होगी ही प्रकट, अब छिपूँ कहाँ जाये
कहा करूँ कछु समझ न आये, मनवा अति अकुलायो ....
एक दिन पनघट, झट गयो आगे डट
मोते लिपट चिपट, मेरो घुँघटा उठाये
गई लाज सों सिमट, ज्यौं ही चली फटाफट
मेरी चुनरी झटक, बोल्यो अब कहाँ जाये
नैन से नैन मिला ले गोरी, कर दे मो मन भायो ....
देख नैन की मटक, रूप रंग की चटक
टेडी मुकुट लटक, पीछे हट्‌यो ही न जाये
सखी लँगर निपट, गयो अधर चिपट
प्रेम रस गटागट, पिये मोयेहु पिलाये
वा दिन ते लग्यो रोग हमारे, करुण दास सुख पायो ....

भजनः – 87

लुट गई लुट गई रे गिरधारी,तेरी सूरतपे बलिहारी
नरसी भगत के सांवरिया और मीरा के गिरधारी।
राधा के चित्त चोर सांवरे, मेरे कुंज बिहारी। लुट गई....
मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल, अखियाँ हैं कजरारी
शाल दुशाले सब ही छोड़ कर, ओढ़े कामर कारी। लुट गई....
जमुना तट और बंसी वट पे, नाचे रास बिहारी
वृन्दावन की कुंज गलिन में, चाल चले मतवारी। लुट गई....

बरसाने में बने सांवरे, चूड़ी बेचने वारी
लगाके बिंदिया पहनके साड़ी, बनगये नर से नारी। लुट गई....
बाँके नाम और काम हैं बाँके, बाँके करुण पुजारी
भक्तन दर्शन देन के कारण,बन गये बाँके बिहारी। लुट गई....

भजनः – ८८

सुन ले साँवरिया, न देर लगा तेरे रँग राचूँगी ।
मुरली मधुर बजा, छमा छमा नाचूँगी ।।
कब से बाट निहारूँ,तू मेरी गलियन आयेगा
प्राणों से जो लागे प्यारी, मुरली मधुर बजायेगा
गिन गिन के दिन काट लिये अब, एक दिना नहीं काटूँगी
मुरली मधुर बजा, छमा छमा नाचूँगी
चोरी–चोरी घर में, नवनीत चुराने घुस आवे
पकड़ा जाये डाँट पड़े फिर,कान पकड़ हा हा खावे
अब चाहे जितना कर चोरी, तुझे तनिक नहीं डाँटूगी
मुरली मधुर बजा, छमा छमा नाचूँगी
एक तरफ बाजेगी, मनमोहन तेरी बाँसुरिया
दूजी ओर बजेगी प्यारे,छम छम मेरी पायलिया
जब तक मुरली बजे तुम्हारी, तब तक मैं नहीं नाटूँगी
मुरली मधुर बजा, छमा छमा नाचूँगी
पहले दाँव लगाओ, तुम हारे दास कहाओगे
जो तुम जीतोगे तो प्यारे, दासी मुझे बनाओगे
तुम हारोगे मनमोहन मैं, जीत के लड्डुवा बाँटूगी
मुरली मधुर बजा, छमा छमा नाचूँगी

भजनः – 89

सखि री! मोहि बंसी सौत सतावै ।
रात नींद दिन चैन चोरि यह, बैरिन रोज रूलावै ।।
सखि री ....

ऐसी बंसी बजे सुरीली, सूखी लकरी है जाये गीली ।
चूल्हे की तो आग बुझावे, हिय में आग लगावै ।।
सखि री ....

यद्यपि बंसी की धुन प्यारी, तद्यपि सौतन है हत्यारी ।
चुभै जिगर में बरछी सी ये, जीवत लास बनावै ।।
सखि री ....

श्यामधरामृत पान करत है, देखि देखि नित जियरा जरत है ।
भीतर छत्तिस छेद है याके, फिर भी भली कहावै ।।
सखि री ....

गिरि धार्‌यौ हरि झुके न तिल भर, याए बजावैं जबहूँ गिरधर ।
भारी इतनी यह प्रियतम कूँ, तीनन ठोर झुकावै ।।
सखि री ....

भजनः – 90

श्याम मोरी अखियाँ भई दीवानी ।
जित देखूँ तित तू ही दीखे, सँग में राधा रानी
कभी हाथ में चक्र लिये हो, कभी वँशी सुख दानी
कभी शंख कभी गदा लिये हो, कभी हो सारंग पानी
नंद गाम बरसाना देखे, वृन्दावन रजधानी
देखे श्री गोवर्धन गोकुल, और जमुना महारानी
ग्वाल बाल संग खेलत देखे, टेरत यशमति रानी
पनघट पे सखियन सँग देखे, करते खींचातानी
कभी दाऊ बाबा सँग देखे, करते आनाकानी
करुण दास तोय देख देखके नैनन बरसे पानी

भजनः – 91

है कालीदह में दुश्मन जो मेरा, नागिन कहाँ नाग तेरा
आज ना होगी तेरे नाग की खैर, मैं देखूँ जहर ।
मैं बालक नादान ना बच्चा
फूट जाऊँ जो घड़ा ना कच्चा
तीरन्दाजी तेरे नाग को, मैं देखूँ कितना बलशाली,
जमुना के पानी में विष है गेरा, नागिन.....
नंद बाबा मेरी यशोरी मैया
मैं गोकुल का कृष्ण कन्हैया
ना आया लड़के काहू से, ना बैरी ना दिया धकेला,
मैं वाके फन पे डालूँगा डेरा, नागिन.....
क्यों फूँकार अगन की मारे
आज कृष्ण से निश्चय हारे
अंग अंग तोड़ूँ अब ना छोड़ूँ, नाग नाथ ऊपर ले जाऊँ,
हो दूर ब्रज से दुःख का अंधेरा, नागिन.....
गेंद तो केवल एक बहाना,
नाग तेरे को नाच नचाना,
नील कमल भी लेके जाना, मामा कंस का कर्ज चुकाना,
तेरा नाग मेरे चरणों का चेरा, नागिन.....

भजनः – 92

उड़ गई रे निंदिया मेरी बंसी क्या श्याम ने बजाई रे
खो गया रे चैन मेरा सारी रात कल ना आई रे
बंसी की तान सुनकर मैं, हैरान हो गई रे
कहाँ पर बजी बता दो, परेशान हो गई रे
सुन के तेरी मुरलिया, मुझे याद बहुत आई रे। उड़ .....

छुप गया जाने कहाँ पर, मुरली दर्द की सुना के
इक बार फिर बजादे कान्हा, सामने तो आ के
मैं तो हो गई दिवानी, मुरली मेरे मनको भाई रे। उड़ .....
छेड़ा तेरा तराना दिल के, पार हो गया रे
ओ मुरली वाले मोहन तुमसे, हाय प्यार हो गया रे
गूंजी री मेरे मन में, बांसुरी की ये सुहाई रे। उड़ .....

भजनः – 93

मंद मधुर मुस्काये गयो री मेरा प्यारे मोहन
नयनों से ये बात करे और मुख से कछु न बोले
जब बोले तब मीठो बोले कानों में अमृत घोले
प्रेम सुधा छलकाय गयो री। मेरो .....
छवि मोहन की लागे जैसे ऋतु बसंत की आई
राधा जी की सुधि हर लेवे प्रीत की ये पुरवाई
अंग अंग महकाय गया री। मेरो .....
बहुत रंगीलो बहुत रसीलो, अति अनुरागी मोहन
चंचल चपल ये अति ही सुन्दर गोपीवल्लभ मोहन
सखियों का मन भरमाय गयो री। मेरा .....

भजनः – 94

चोर चोर का सारे बीरज में आज मचा है शोर
कृष्ण कन्हैया नंद का लाला बन गया माखनचोर
दौड़े आए गोप गोपियाँ सब मोहन के पीछे
लेकिन वो चढ़ गये कदम पे सारे रह गये पीछे
जय–जय चीर चुरैया, जय–जय रास रचैया
नीचे आओ कृष्ण कन्हैया शोर है चारों ओर। कृष्ण ....
है हाथों में गिरधारी के उन सखियों की लाज

रास रचाए जिनके संग में कितनी व्याकुल आज
जय-जय राच रचैया, जय-जय वंशी बजैया
बाँधी नटखट मनमोहन ने सम्मोहन की डोर। कृष्ण .....
कंस पूतना शिशुपाल भी जिनसे गये थे हार
वही कन्हैया मैया के हाथों पिटने तैयार
जय-जय नंदकिशोर जय-जय माखनचोर
श्रीकृष्ण की लीलाओं का होता ओर न छोर। कृष्ण .....
नरसी भक्त के सांवरिया बने अर्जुन के रथवान
मीरा के गोपाल बने और भक्तों के भगवान
जय-जय लीलावतारी जय-जय संकटहारी
बंशी बजाके नैन मिलाके ले गयो चितचोर। कृष्ण .....

भजनः-95

मोहे सांवरा सलोना पसंद आ गया
नंद का वो लाला मन को लुभा गया
काली कमली बाँकी चितवन, वापे वारूँ मैं तो तन मन
सुन री सखी री मेरे मन को भा गया
मोहे सांवरा .....
मोर मुकुट सिर मुरली वारो, श्याम सखी री मोहे लागे प्यारो
ब्रज का वो ग्वाला चितवन पे छा गया
मोहे सांवरा .....
जब कान्हा की मुरली बाजे, पतझड़ भी सावन सा लागे
मुरली की धुन पे सबको नचा गया
मोहे सांवरा .....
छैल छबीला कुंज बिहारी, तिरछी नजरिया लागे प्यारी
ऐसी मारी नैन कटारी, मर गई मैं तो लाज की मारी
नयनों से मेरे नयना लड़ा गया
मोहे सांवरा .....

भजनः – 96

वंशी बजाय कोई जमुना किनारे
दौड़ी चली आयें सखियाँ जिसके सहारे
आते जाते बीच डगर में, छेड़े वो नंद का लाला
पनघट पे मोरी बैयां मरोरी नटखट वो गोकुल का ग्वाला
मटकी गिराये कभी, कांकरिया मारे। वंशी .....
नयनों से करे मन की चोरी, हाथों से माखन चोरी
चीर चुराये फिर भी वो भाये, माने ना आँख निगोड़ी
नैनों की ज्योती तेरी आरती उतारे। वंशी .....
जमुना के तट और वंशीवट, मोहन गऊऐं चराए
बिन देखे जियरा अकुलाए, शाम ढले घर आए
हर ब्रजबाला तेरा पंथ निहारे। वंशी .....

भजनः – 97

दीनबंधू जागिये, कृपासिंधू जागिये
जागिये क्या आप यों ही सोते रहेंगे,
यो भक्तों पे अन्याय ही क्या होते रहेंगे
क्या आप के होते हुए हम रोते रहेंगे। दीनबंधू .....
सत्य मर रहा है, झूठ पल रहा है
पुण्य मिट रहा है, पाप फल रहा है
ये आपके संसार में क्या चक्र चल रहा है। दीनबंधू .....
रक्षा करो भगवन देर हो न जाय
देर हो न जाय अंधेर हो न जाय
अब धर्म उठ न जाय, विश्वास खो न जाय। दीनबंधू .....
निर्दोष बालकों की हत्यायें हो रही हैं
ममता की प्रतिमायें मातायें रो रही हैं
आकाश रो रहा है, ये धरती रो रही है। दीनबंधू .....

भजनः – 98

पाके तू पाके, नर का चोला, बड़ा अनमोला
काहे भटका तू आके। पाके तू....
करने को आया था भजन, करने लगा तू क्या यतन
माया से निकलना न आया, दुनिया में मन को फँसाया
अकल गई तेरी मारी, की न श्याम संग यारी
सोने जैसी काया तेरी,बन जाएगी राख की ढेरी
हीरे जैसा जन्म गंवाके, अंत चला सब यहीं लुटाके। पाके तू....
रोज एक दिन घट जाये, क्यों तू समझ नहीं पाये
मौत न करेगी इंतजार, रहती सदा ये होशियार
होगा जब मौत के हवाले,रो रो कहेगा कोई बचाले
दारु दवा करे नहीं काम, आयेगा जब मौत पैगाम
जब तक लाये वैद्य बुलाके, यमदूतों ने डाले डाके। पाके तू....

भजनः – 99

ब्रज मीठो वैकुँठ खारो,
दोउन कूँ देख विचारो।
या ब्रज माहीं मुरली बाजे, उहाँ शंख कर धारो । दोउन ...
ब्रज में मोहन रूप श्याम को, उहाँ चतुर्भुज वारो । दोउन ...
वृन्दावन मधुवन गोवर्धन,उहाँ न जमुन किनारो । दोउन ...
सखा सखी नहिं खेल उहाँ पे,नहिं बंशीवट प्यारो । दोउन ...
न कोइ गाये चरावन जाये, न गौ वत्स हुंकारो । दोउन ...
काउ के उहाँ बाप न मैया, न कोउ वारी वारो । दोउन ...
उहाँ कहत जगदीश्वर स्वामी,इहाँ कहत सब सारो । दोउन ...
करुण दास श्रीजी पद सेवत, इहँ श्रीचरण पुजारो । दोउन ...

भजनः – 100

बल चतुराई काम न आये, होनी कोई टाल न पाये ।
कंस कृष्ण को मार न पाया, अपना मरना टाल न पाया
भाग्य लेख नहीं बदला जाये, होनी कोई टाल न पाये
अष्ट सुतों की देवकी माई, दूध किसी को पिला न पाई
व्याकुल नैना नीर बहाये, होनी कोई टाल न पाये
हरिश्चन्द्र से राजा दानी, नीच डोम घर भरते पानी
पत्नी बालक हुए पराये, होनी कोई टाल न पाये
रंक भिखारी राजा रानी, पापी धर्मी मूरख ज्ञानी
भावी सबको नाच नचाये, होनी कोई टाल न पाये
दुख को कोई नहीं बुलाता, सुख को कोई नहीं भगाता
फिर भी दुख आये सुख जाये, होनी कोई टाल न पाये
करुणदास विधि हाथ खिलौना,फिर क्यों सोचे हो जो होना
भाग्य भोग शुभ कर्म कमाये, होनी कोई टाल न पाये

भजनः – 101

भाग दौड़ ले चाहे जितना अंत पड़ेगा खाट पे
दो पाँवों से चलते चलते अंत चलेगा आठ पे
धन दौलत सम्मान घनेरा क्यों इतराता ठाट पे
छोड़ सकल वैभव जाएगा चिता लगेगी घाट पे
रोगों का घर बना बुढ़ापा फिर भी बैठे हाट पे
छोड़ भजन तू स्वाँस लुटाए धन ग्राहक की बाट पे
घर बाहर की चिंता करता ध्यान न पूजा पाठ पे
करुणदास उस दिन की सोचो शव लेटे जब काठ पे

भजनः – 102

भूले मनवा समझ क्यों ना पाये, एक दिन होंगे अपने पराये
जिनके कारण प्रभू को तू भूला
जिनको पाकर के मनमें तू फूला
वो ही अग्नि में तुझको जलाये, मौत जब आके डंका बजाये
दीप खुद जल के देता उजारा
इसलिये सबको लगता है प्यारा
हुआ दिन दुनियां उसको बुझाये, बिन स्वार्थ किसे कौन भाये
फूल बगियामें जब तक खिले थे
भंवरे आकर के हँस हँस मिले थे
आज बगिया के फूल मुरझाये, एक भंवरा भी पास ना आये
तेरी जब तक रहेगी जवानी
तुझपे दुनियां रहेगी दीवानी
जब बुढ़ापा जवानी को खाये, तू किसी के भी मन को ना भाये
सच्चा साथी प्रभु है हमारा
सुख दुःखमें जो देता सहारा
बिन प्रभु के ना तू चैन पाये, ये करुण दास तुझको बताये

भजनः – 103

मंगतापन सदा के लिये मिट गया ।
मांगने जो तेरे द्वार पर आ गया ।।
जब तक ना सुदामा गये द्वारिका
दाने दाने को घर में तरसते रहे
द्वारिकानाथके द्वार पहुँचते ही वो
देके सारी गरीबी महल पा गया

भात भरने को नरसी चले जिस घड़ी
गाड़ी टूटी हुई बैल कमजोर थे
गाड़ी नरसी की टूटी हुई चल पड़ी
हाँकने गाड़ीको मेरा श्याम आ गया
कौरवोंसे घिरी द्रौपदी रो रही
यहाँ लाज बचैया कोई नहीं,
हाथ दोनों ऊठा के पुकारा तुम्हें
राखने लाज श्याम बनके चीर आ गया

भजनः – 104

मत जाना रे बटोही उस मग से,
होगा बचना कठिन उस ठग से ।
प्रेम नगर की डगर में बैठा, डाकू चोर लुटेरा
डगर चलत वो सबको लूटे, निष्ठुर ढ़ीठ घनेरा
मैं हुँ वाकिब वाकी रग रग से
होगा बचना कठिन उस ठग से
हिम्मत नहीं कोई भागे सुन वंशी की ललकार
नैन कटारी लेके सीधा करे जिगर पे मार
उठ जाता है वो फिर इस जग से
होगा बचना कठिन उस ठग से
लूटे राजा रंक भिखारी, गृहस्थी सन्यासी
लूट कहीं का न छोड़े, नहीं ममता बचे जरासी
फिर दुनियां बसे नई अलग से
होगा बचना कठिन उस ठग से

मीराँ तुलसी सूर कबीरा ठगे हैं भक्त तमाम
करुण दास का सर्वस लूटा किया कैद ब्रजधाम
वाने लूट लिये नारद से
होगा बचना कठिन उस ठग से

भजनः – 105

जरा तारों से तारे मिला कर तो देख
प्रभू बंधे हुए खिंचे हुए चले आयेंगे
पाया शबरी ने जग के बन्धन तोड़कर
गौतम नारी ने चरणों की रज चाटकर
पाया कुब्जा ने चन्दन लगाकर उन्हें
उनके चरणों में मस्तक झुकाकर तो देख। प्रभु .....
मन के मन्दिर में पगले बिठाले उन्हें
जीवन नैया का केवट बनाले उन्हें
फिर तो आने में उनको कहाँ देर है
जरा भाव से उनको बुलाकर तो देख। प्रभु .....
वो है ठाकुर पुजारी तू बन कर तो देख
वो है दाता भिखारी तू बन कर तो देख
उनके दर से कोई खाली जाता नहीं
जरा द्वारे पे झोली फैला कर तो देख। प्रभु .....
गाया जिसने मिला उसको मुक्ति का धाम
तरे पत्थर लिखा जिस पर रघुवर का नाम
तेरी नैया किनारे से क्यों ना लगे,
जरा हृदय में नाम को लिख कर तो देख। प्रभु .....

भजनः – 106

कोई लाख करे चतुराई करम का लेख मिटे न रे भाई
जरा समझो इसकी सच्चाई रे। करम का .....
इस दुनियाँ में भाग्य के आगे चलेना किसी का उपाय
कागज हो तो सब कोई बांचे करम ना बांचा जाए
इक दिन इसी किस्मत के कारण बन को गये थे रघुराई
काहे तू मनुवा धीरज खोता काहे तू नाहक रोए
अपना सोचा कभी नहीं होता भाग्य करे सो होए
चाहे हो राजा चाहे भिखारी ठोकर सभी ने यहाँ खाई
चाहे तू जग से फंद छुड़ाले चाहे तू जितना भाग
किस्मत तेरे साथ चलेगी चाहे ले वैराग
वो पाण्डव भी वन वन भटके जिनके सखा थे कन्हाई

भजनः – 107

बड़ी मन्नतों से था पाया तुझे, रहे भूखे लेकिन खिलाया तुझे
मगर तूने बदला ये कैसा लिया
ओ नादान! माता पिता संग तूने दगा क्यों किया। बड़ी .....
कभी लड़खड़ाए तेरे पाँव जब,
तो उंगली पकड़ के चलाया तुझे
तू रातों को उठ उठ के रोता था जब,
तो बाहों में अपनी झुलाया तुझे
तू ममता के मारों का दिल तोड़कर,
अलग हो रहा है इन्हें छोड़कर
बुढ़ापे में अब कौन पूछे इन्हें,

ओ नादां! बता प्यार के बदले तूने ये छल क्यों किया। बड़ी.....
कई बार गिरवी रखी चूड़ियाँ,
मगर फिर भी ज्यादा पढ़ाया तुझे
फटे कपड़े सी – सी के पहने मगर,
बड़ा आदमी था बनाया तुझे
मगर भूल कर इनका उपकार ही,
लगाया गले तूने संसार ही
कहा उसने और तू अलग हो गया
तू इकलोता बेटा था माँ – बाप का तूने ये क्या किया। बड़ी ......
बड़ी बदनसीबी है माँ – बाप की,
जो इकलोता बेटा भी ऐसा मिले
गला घोंट दो ऐसी संतान का,
जो सारी उम्र तो न रोना पड़े
दुखाते हैं दिल जो भी माँ – बाप का,
उन्हें मिलता द्वारा सदा नरक का
जहाँ भर में दर – दर भटकते हैं वो
ममता के मारों को जिनके कर्म ने कभी दुःख दिया। बड़ी ......

भजनः – 108

ओ मूर्ख बंदे क्या है रे जग में तेरा
ये तो सब झूठा सपना है, ना तेरा ना मेरा। ओ ...
कितनी ही माया जोड़ ले तू, कितने ही महल बना ले
तेरे मरने के बाद रे पगले, तेरे ये घरवाले
दो गज कफन का टुकड़ा देकर,छीन लेंगे तेरा डेरा। ओ...

कोठी बंगला कार देखकर, क्यों इतना इतराता है
पत्नी और बच्चों के बीच तू फूला नहीं समाता है
ये तो चार दिनों की चाँदनी,फिर आयेगा अंधेरा। ओ ...

मूरख अपनी मुक्ति का तू, कर ले जल्दी उपाय
क्या जाने किस घड़ी मौत तेरी, बांह पकड़ ले जाय
तेरे शीश पर घूम रहा है, बन कर काल सपेरा। ओ ....

भजनः – 109

भोले तेरी शान निराली, सारे जग को भाये
जो भी तेरे दर्शन पाये, भव सागर तर जाये
माथे ऊपर चंदा सोहे, जटा में गंगा प्यारी,
गले में विषधर खाये लपेटा, हे शिव डमरु धारी
पी कर भगवान् विष का प्याला, नीलकंठ कहलाये ।
भोले तेरी.....

परशुराम को दिया था परसा, रावण को खड़्ग भारी,
श्री विष्णु को दिया सुदर्शन, हे भोले भंडारी,
भस्मासुर को देकर कंगन, दौड़े हाथ ना आये ।
भोले तेरी.....

श्री कैलाश की शोभा न्यारी, शिव परिवार है साजे,
पार्वती और नन्दी के संग, गणपति आप विराजे,
शिव शक्ति संग देख के सबको, शर्मा शीश झुकाये ।
भोले तेरी.....

भजनः – 110

जर्रे जर्रे में है झांकी भगवान् की,
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की
नामदेव ने पकाई, रोटी कुत्ते ने उठाई
पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे
बोले रूखी तो न खाओ, कुछ घी तो लेते जाओ
रूप अपना क्यों मुझसे छुपा रहे
तेरा मेरा एक नूर, फिर काहे को हूजूर
तूने शकल बनाई है स्वान की
मुझे औढ़नी ओढ़ादी ईसान की। जर्रे जर्रे .....
निगाह मीरां की निराली, पी के जहर की प्याली
ऐसा गिरधर बसाया हर श्वास में
आया काला जब नाग, बोली धन्य मेरे भाग
हरि आये आज साँप के लिवास में
आओ – आओ बलिहार, काले कृष्ण मुरार
बड़ी कृपा है कृपा निधान की
धन्यवादी हूँ मैं आपके अहसान की। जर्रे जर्रे .....

भजनः – 111

वाह वाह भइ मौज फकीराँ दी
कदे ताँ खावे चना चबैना, कदे लपट ले खीराँ दी
कदे ताँ औढ़े शाल दुशाले, कदे ताँ गुदड़ी लीराँ दी
माँग ताँग के टुकड़ा खावे, चलदे चाल अमीराँ दी

भजनः – 112

क्या क्या कहूँ दिखलाती हैं क्या रंग चुगलियाँ
करती सुरंग को भी ये बदरंग चुगलियाँ
बुद्धि को लगा देती हैं ये जंग चुगलियाँ
करती सभी को बार बार तंग चुगलियाँ
आदत है चुगलखोर की नहीं जाती चुगलियाँ
दुनिया में सबसे बढ़के उनको भाती चुगलियाँ
नहीं साथ छोड़ती कभी ये साथी चुगलियाँ
सोए सपन में रात को आ जाती चुगलियाँ
रसगुल्ले से भी बढ़के लगती स्वाद चुगलियाँ
उनके लिये भगवान् का प्रशाद चुगलियाँ
भूलेंगे अच्छी बात रहें याद चुगलियाँ
दुष्टों के दिल को देती हैं अह्लाद चुगलियाँ
हर रोज ईर्ष्या से न्हाती हैं चुगलियाँ
झूठी कसम का तेल लगाती हैं चुगलियाँ
तन कपट के कपड़ों से छिपाती हैं चुगलियाँ
और झूठ का श्रृंगार सजाती हैं चुगलियाँ
सब जानते हैं नरक ले जाती हैं चुगलियाँ
फिर भी दिलों के उनके सुहाती हैं चुगलियाँ
सत्संग में भी याद आ जाती हैं चुगलियाँ
सद्भाव भक्ति पुण्य खा जाती हैं चुगलियाँ
जब करती हैं घर घर अति उत्पात चुगलियाँ
सबके दिलों को देती हैं ये घात चुगलियाँ
बनती लड़ाई गाली डंडा लात चुगलियाँ
फिर करुण दास करते क्यों बिन बात

भजनः – 113

यारों सुनो क्या करता है महापाप चुगलखोर
कर चुगलियाँ लेता है सबका श्राप चुगलखोर
बिन बात के ही देता है संताप चुगलखोर
फँसता बनाये जाल में फिर आप चुगलखोर

सच्चाई को ललकारता है, जग में चुगलखोर
बेमौत सबको मारता है, जग में चुगलखोर
घर घर में फूट डालता है, जग में चुगलखोर
सबके दिलों को सालता है, जग में चुगलखोर

अच्छाई में भी ढूँढता बुराई चुगलखोर
छुप छुप दिलों में डालता है खाई चुगलखोर
हितकारी बनके करता दुश्मनाई चुगलखोर
बनता कभी माँ बाप मित्र भाई चुगलखोर

घड़ियाल के से आँसू ढरकाता चुगलखोर
बन मंथरा कैकई को भड़काता चुगलखोर
सुख चैन सबका छीन के ले जाता चुगलखोर
मन में भरम के जाल को बिछाता चुगलखोर

ये झूठ को भी सत्य बनाता है चुगलखोर
और सत्य को भी झूठ बताता है चुगलखोर
अपने को भी बेगाना बनाता है चुगलखोर
अच्छों को भी निशाना बनाता है चुगलखोर

उपकारी दो हैं जग में माता व चुगलखोर
तन मन की मैल धोते माता व चुगलखोर
हाथों से धोती माता जिह्वा से चुगलखोर
है मात से भी बढ़के इस जग में चुगलखोर

पापों के बीज बोता दिन रात चुगलखोर
सिर पाप सबके ढोता दिन रात चुगलखोर
मानव जन्म को खोता दिन रात चुगलखोर
देता दुखों को न्योता दिन रात चुगलखोर

मारे सभी को चुपके ये डंक चुगलखोर
रहता सभी से छत्तीस का अंक चुगलखोर
भादों की शुक्ल चौथ का मयंक चुगलखोर
कहे करुण दास देता कलंक चुगलखोर

भजनः – 114

गर्भ में पलती कन्या जन्म को तरसी है
माँ की क्रूरता बन के कयामत बरसी है
गर्भ में कन्या मौत से डरती, अपनी माँ से विनती करती
मुझको मत मारो मेरी मैया, मैं हूँ तेरी भोली गैया
चाकू छुरी मत चलवाओ, निर्दोषी हूँ मत मरवाओ
अपनी मर्जी से नहीं आयी, आयी हूँ तेरी ही बुलाई
मुझको जन्म तो देकर देखो, अपनी गोद में लेकर देखो
कभी न तुझको तंग करूँगी, हर पल तेरा संग करूँगी
थोड़े में कर लूँगी गुजारा, बन जाऊँगी आँख का तारा
भईया से भी नहीं लड़ूँगी, राखी बन्धन टीका करूँगी
मैया मुझ को बोझ न मानो, मैं हूँ तेरी गैर न जानो
तन मन से मैं सेवा करूँगी, जब तक तेरे पास रहूँगी
बीस वर्षकी करदो फिर चली जाऊँगी
जीवन भर मैं तेरे ही गुन गाऊँगी
घर में हिस्सा कुछ नहीं लूँगी, सबकुछ भईया को दे दूँगी
अपनी किस्मत का खाऊँगी, कभी न तुमसे कुछ चाहूँगी
रो रोकर मेरे नैना बरसे, बेटी तेरे प्यार को तरसे
तेरे बाग की एक कली हूँ, ना तोड़ो खिलने को चली हूँ
तेरा जीवन महकाऊँगी, आँगन में खुशियाँ लाऊँगी
मुझे नहीं चाहिये धन माया, दो आँचल की शीतल छाया
फिर भी ना माने तेरा मन, कर देना मुझे किसी के अर्पण
भीख माँग के मैं जी लूँगी, घूँट आसूँओं के पी लूँगी
कैसे भी कर लूँगी गुजारा, नहीं आऊँगी कभी दोबारा
लैकिन मैया मुझे ना मारो, एक बार तो कह दो ना रो

कान बने हैं बहरे माँ के, ममता हृदय में ना झाँके
माँ बच्चों की होती रक्षक, लेकिन आज बनी है भक्षक
जिस कन्या का पूजन करती,जिसके चरणोंमें सिर धरती
उसकी आज बनी हत्यारी, हाय! विधाता ने मति मारी
मात-पिता होते हैं प्यारें, लेकिन आज बने हत्यारे
भाव न समझे जालिम, रोते मुखड़े के
टुकड़े टुकड़े कर दिये,दिल के टुकड़े के

भजनः – 115

रहके भी दूर होती हैं अति पास बेटियाँ
मैं दूर हूँ न होने दे अहसास बेटियाँ
माता पिता हों दुखी तो उदास बेटियाँ
इसीलिये तो होती हैं ये खास बेटियाँ
जब भी बुलाये बाप आई दौड़ बेटियाँ
घर के अधूरे काम आई छोड़ बेटियाँ
बंधन न रोक सके आई तोड़ बेटियाँ
इसीलिये तो होती हैं बेजोड़ बेटियाँ
साक्षात् ममता प्रेम की हैं खान बेटियाँ
माँ बाप के होठों की हैं मुस्कान बेटियाँ
करती सदा दिल जान से सन्मान बेटियाँ
इसीलिये तो होती हैं महान् बेटियाँ
बेटों से अधिक होती हैं सुखदाई बेटियाँ
बँटवाये न माँ बाप की कमाई बेटियाँ
बनती सदा ही दुःखों में सहाई बेटियाँ
फिर जन्मसे पहले ही क्यों मरवाई बेटियाँ

भजनः – 116

तुझ बिन ना चैन पाऊँ, सुन टेर मुरलीवाले
मैं सासुरे न जाऊँ, ब्रज धाम में बुला ले
बेबस है अबला नारि, तेरे बल पे जी रही हूँ
दिन रात आहें भरती, आँसू को पी रही हूँ
कब लोगे सुध हमारी,जगजाल से बचा ले
मैं सासुरे न जाऊँ, ब्रज धाम में बुला ले
जो बीती रुक्मिणी पे, वो हम पे आज बीती
तेरे बल को पा के प्यारे, हारी वो बाजी जीती
तुझ बिन है कौन मेरा,आकरके जो सँभाले
मैं सासुरे न जाऊँ, ब्रज धाम में बुला ले
जाऊँ कहाँ करूँ क्या, कुछ भी समझ न पाऊँ
माता पिता न माने, फिर किसको जा सुनाऊँ
मेरे मन को प्रेरणा दो,दासी ये तुमको पा ले
मैं सासुरे न जाऊँ, ब्रज धाम में बुला ले

भजनः – 117

मैं तो हाथ में लेके इकतारा, गोविन्द गुण गाऊँगी
मुझे मिल गया सद्गुरु प्यारा, गोविन्द गुण गाऊँगी
सद्गुरु मेरे ने क्या कर डाला, ऐसा पिलाया प्रेम का प्याला
मेरा हो गया मन मतवाला, गोविन्द ...
भूल गई मैं अपनी हस्ती, नस नस चढ़ गई नाम की मस्ती
मैं भूली घर परिवारा, गोविन्द ...
ध्यान में उनके ऐसी खोई, उन बिन सूझे ओर ना कोई
सूना सूना लगे जग सारा, गोविन्द ...
बस्ती बस्ती नगर नगर में, घर घर बन बन डगर डगर में
बहे कृष्ण नाम रस धारा, गोविन्द ...

भजनः – 118

कहाँ छिपे हो तुम्हें पुकारूँ, हे हरि दयानिधन
कर अनाथ क्यों छोड़ गये हो, आओ हे भगवान

आ जाओ मेरे साँवरे, व्याकुल हैं मेरे प्रान
मुझे विरह में छोड़कर, ना ले तू इम्तिहान

हे जीवन धन जग के स्वामी, मैं हूँ तेरी दासी
तुम बिन दीन अनाथ हो गई, हूँ दर्शन की प्यासी
देर न कर अब दर्श दिखाओ, करो कृपा का दान

मुझे अकेली छोड़ गये क्या, गलती मुझसे होई
क्षमा करो अपराध हमारा, भूल हुई जो कोई
इस दासी को गले लगाओ, अब छोड़ो ये मान

बहुत सहा है दर्द विरह का, ओर सहा नहि जाये
तन को त्याग प्राण का पंछी, उड़ने का ललचाये
तुम बिन बीत रहा है मेरा, पल पल युगों समान

करुण पुकार सुनो करुणामय, और न हँसी कराओ
प्रीत निभाके सबके सन्मुख, दुनियाँ को दिखलाओ
कैसे सुनू ये दुनियाँ तुमको, कहती है पाषान

भजनः – 119

रो रो नैना बाट निहारे, पल पल मनवा तुझे पुकारे। तेरी याद सताये
आजा मेरे प्रीतम प्यारे मेरा दिन अकुलाये
जब दुनियाँ सुख से सोये, मैं जागूँ याद करूँ
दिल तड़फ तड़फ के यों रोये, किससे फरियाद करूँ
रो रो नैना बाट निहारे ....
रिमझिम बरसें नैन कभी रूकते नहीं
जीवन हो गया भार श्वाँस रुकते नहीं
मेरी किस्मत ही जब सोये, किससे फरियाद करूँ
रो रो नैना बाट निहारे ....
मैं हूँ इक मजबूर तुझे मजबूरी क्यों
हो गया तुमसे दूर बढ़ी ये दूरी क्यों
जब अपने पराये होये, किससे फरियाद करूँ
रो रो नैना बाट निहारे ....

भजनः – 120

करुणा सागर अब तो मेरी सुध लीजिये
मैं अनाथ हूँ मात–पिता बिन, मेरी रक्षा कीजिये
इस झूठी दुनियाँ में मेरा, कोई नहीं सहारा
दु:खों की बहती नदिया का,तू ही एक किनारा
भटक रहा हूँ निर्जन वन में, मुझे सहारा दीजिये
सच्चे मातपिता तुम मेरे, तुम ही पालन हारे
एक बार तो दर्शन दे दो, मेरे प्रियतम प्यारे
दर्द सहा न जाये अब तो, इस बालक पर रीझिये

भजनः – 121

चिंतामणि के फेर में, भूला क्यों श्याम को
आया था किसलिये यहाँ, भूला क्यों काम को

पुतली हुँ हाड़ माँस की, ऊपर से हूँ सजी
गागर हुँ विष्ठा मूत्र की,चमड़े से हूँ ढकी
तज कर मेरी दीवानगी, दिल में हरि बसा
वो ही तुम्हारा मीत है दुनिया नहीं सगी
प्रभु का स्वरूप छोड़के, चाहे क्यों चाम को
आया था किसलिये यहाँ, ...

जोवन है चार रोज का, इक दिन ये जायेगा
डाली से पत्ता टूट के, वापिस न आयेगा
जीवन के बाग में सदा खिलते नहीं हैं फूल
सावन बहार आज तो पतझड़ भी आयेगा
जप ले तू दुनिया छोड़ के मोहन के नाम को
आया था किसलिये यहाँ, ...

लेकर सितार गीत मैं मोहन के गाऊँगी
बनके जोगनियाँ आज मैं हरि की कहाऊँगी
संसार से तो वास्ता रखना नहीं मुझे
सबको रिझाना छोड़के, उनको रिझाऊँगी
तुम भी भजोगे आज से आनंद धाम को
आया था किसलिये यहाँ, ...

भजनः – 122

जोगनियाँ बन अपने श्याम की
जपूँ माला सदा मैं तो श्याम नाम की
सुनके सत कथा, मिट गई व्यथा
प्रेम गली मैं तो चली, जग से मन हटा
बावरी भई न रही किसी काम की, जोगनियाँ ....
मन के मीत को, उनकी प्रीत को
भूलूँ नहीं जाउँ कहीं, भूलूँ जग रीत को
दुनियाँ की बात लगे खामा खाम की, जोगनियाँ ....
रोके न कोई, टोके न कोई
लगी लगन हुई मगन, सपनों में मैं खोई
सुन बंसी पायल बजी है पाँव की, जोगनियाँ ....

भजनः – 123

जग के बंधन तोड़ के सब छोड़ के दर आ गई, तुम्हारा प्यार पाने
दर्शन कर चित चोर के रणछोड़ के ललचा गई, तुम्हारा प्यार पाने

इस जीवन की डोर सौंप दी, आज तुम्हारे हाथ
चाहे जैसा मुझे नचा लो, मेरे विट्ठल नाथ
चाहे तू सम्मान दे अपमान दे मैं आ गई, तुम्हारा ..
महिमा सुनके भक्तजनों से, दिल में तुझे बसाया
प्यार तुम्हारा पाने को, इस दुनिया को ठुकराया
अखियोंसे अखियाँ मिली दिलकी कली मुस्का गई,तुम्हारा ..

पाँव में घुंघरु बाँध के नाचूँ, हाथ में ले इक तारा
गीत प्रेम के गाये रात दिन, मेरा मन मतवारा
साँवर सूरत सोहिनी मन मोहिनी मन भा गई, तुम्हारा ...

भजनः – 124

हे पाण्डुरंगा विट्ठला, मोहे इतना ना मजबूर करो
जन्म जन्म की दासी हूँ, इस चोरवट से मत दूर करो

दुष्ट सिपाही खड़े हैं इनसे, मैं कैसे बच पाऊँगी
इससे पहले पटक पटक सिर, तेरे दर मर जाऊँगी
मैं राजा के घर न जाऊँ, चरणकमल की धूल करो
मैं वैश्या की बेटी हूँ, पर दिल से तुमको प्यार किया
तन मन अर्पण किया तुम्हीं को, तुम पे ही एतबार किया
हे जोहरी मुझ कोयले को, अपना कर कोहिनूर करो
चाहते सब तन की सुंदरता, मेरे लिये तो श्राप बना
नृत्य गान गुण रूप कला सब, मेरे लिये संताप बना
नहीं चाहिये गुण तन सौंदर्य, इसको चकनाचूर करो
जब तक प्राण रहें इस तन में, कोई न इसको छू पाये
करो इसे स्वीकार ये दासी, तुझमें अभी समा जाये
ले लो अपने चरणकमल में, विनती को मंजूर करो

भजनः – 125

सुखिया पूछे श्याम से, सुखिया पूछे श्याम से
ऐसी घोर परिक्षा भगवन्, ली मेरी किस काम से
बचपनमें तो मातपिता का, सिर से उठा है साया
भाई बहन नहीं हैं मेरे, अपना तुझे बनाया
काट रही हूँ अपना जीवन – श्याम तुम्हारे नाम से
सास ससुर और पति हैं करते, जी भर अत्याचार
भूखी प्यासी सहती सब कुछ, सुनता कौन पुकार
आप हैं अंतरयामी भगवन् – रह गये क्यों अनजान से
मात पिता माना है तुमको, बेटी का दुःख सुनलो
बंधी खंभ से तुम्हें पुकारूँ, अर्ज मेरी अब सुन लो
सुखिया का दुख हरने आओ – श्री पंडरपुर धाम से
कहने को तो नाम है सुखिया, सुख कभी ना पाया
तुझे बना के अपना मैंने, रोता दिल समझाया
तू भी भूल गया क्यों मुझको – पूछती हूँ भगवान् से
इस दुखिया की दर्द कहानी, सुन ले मुरली वाले
या तो मुझको दर्शन दो या, अपने पास बुला ले
जीवन मुझ पर भार बना है – बैठे क्यों आराम से

भजनः – 126

हे गोपाल गवाह तू मेरा, तुझ बिन कोई ओर नहीं
साथ चलो या साथ छोड़ दो, तुम पर मेरा जोर नहीं
सबकी रक्षा करने को गीता में वचन दिया तुमने
युद्ध महाभारत में केशव, सत का साथ दिया तुमने
तोड़ मौन दो आज गवाही, मेरे दिल को तोड़ नहीं
पंचों बीच लिखा जो कागज, तेरे बल स्वीकार किया
हार जीत अब हाथ तुम्हारे, सब कुछ तुम पर डाल दिया
ले विश्वास द्वार पे आया, मुझसे यूँ मुख मोड़ नहीं

भजनः – 127

जब तक है आकाश पे सूरज, गंगा में है पानी
अमर रहेगी धरती पर रविदास की अमर कहानी
छोटी जाति छोटी पाँति छोटे कुल में जन्म लिया
गुदड़ी के इस लाल ने मानव धर्म का ये संदेश दिया
कर्म से कोई नीच नहीं सब काम हैं अच्छे काम
हर मानव के मन मन्दिर में रहते हैं श्री राम
तभी तो कह गये संत कि प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी
अमर रहेगी धरती पर.....
धर्म के ठेकेदारों ने ऐसा अंधेर मचाया
प्रेम के बदले लोगों को नफरत का पाठ पढ़ाया
ऐसे युग में भी रविदास ने सबको बाँटा प्यार

राम नाम का मन्त्र दिया दुखियों का किया उद्धार
भेद भाव की दीवारों में बंद थे जग अज्ञानी
अमर रहेगी धरती पर.....
इस माटी का कण कण इक दिन इनकी कथा कहेगा
गगन में जब तक रवि चमके, रविदास का नाम रहेगा
जब जब अत्याचार यहाँ सीमा को करता पार
इस धरती पे महापुरुष तब लेते हैं अवतार
समय की आँधी मिटा ना सकती संत की निर्मल वाणी
अमर रहेगी धरती पर.....

भजनः – 128

मन चंगा तो कठोती में गंगा, दर्श दिखा दे हे गंगा मैया
आ मेरे अँगना देजा तू कँगना,
सत को जितादे हे गंगा मैया
जय बोले तेरी संसार सारा,
पापों को धोदे जल की धारा
चाहे तो पल में पार उतारे,
जीवन की नदिया का तू है किनारा
जो ये ना माने मर्म ना जाने, इनको बता दे हे ...
ममतामई तेरी महिमा बड़ी है,
तूने सदा सबकी झोली भरी है
सत को असत से जगत ने है घेरा,
तेरे भक्त पर विपदा पड़ी है
विपदा ये मेरी परीक्षा है तेरी, नाता निभा दे हे ...

दुनिया अब तो मेरी हँसी उड़ाये,
मुझसे ये अपमान सहा ना जाये
लहरों पर लहराती अब तू आजा,
गंगा मैया काहे देर लगाये
घर आंगन को पावन आज बना दे,
दर्शन दे नैनन की प्यास बुझादे
लाज भगत की तेरे हाथों में है,
देकर कंगन मेरी लाज बचा ले
लाज बचालेऽ लाज बचालेऽऽ लाज बचालेऽऽऽ गंगा मैयाऽऽऽऽऽ

भजनः – 129

गुरु बिन जिया न जाये, गुरु बिन रहा न जाये
गुरुवर हैं मेरी जिन्दगी, उन बिन न चैन आये
रखते थे साथ अपने, इक पल जुदा न होते
यादों में उन पलों की, जीते हैं रोते रोते
या तो मिला दे सद्‌गुरु से या मौत आ ले जाये
गुरु बिन.....
भटके थे माया बन में, सद्‌गुरु ने राह दिखाई
भक्ति का दे खजाना, प्रीति की लौ लगाई
अब दूर कर गुरु से, क्यों दास को रुलाये
गुरु बिन.....

भजनः – 13 0

रो रो बिनती करूँ मैं हनुमान से ।
हाय मुझको मिलादो मेरे श्याम से ।।
तुम मेरे सद्‌गुरु राह बता दो मुझे ।
विरह सागर किनारे लगा दो मुझे ।।
दुखिया सुग्रीव मिलवाया श्रीराम से ।
हाय मुझको मिला दो मेरे श्याम से ।।
जानकी का संदेशा दिया राम को।
ऐसे मेरा संदेशा दो घनश्याम को ।।
उनको चाहने लगा मैं अधिक प्रान से ।
हाय मुझको मिला दो मेरे श्याम से ।।
दास तुलसी विभिषण को मारग दिया ।
तुमने सुन भक्तों की बिगड़ा कारज किया ।।
प्रार्थना तुम मेरी भी सुनो ध्यान से ।
हाय मुझको मिला दो मेरे श्याम से ।।
दूर करते हो भक्तों के दुःख तुम सदा ।
क्या नहीं जानते मेरी विरहा व्यथा ।।
रह गये क्यों प्रभो आज अन्जान से ।
हाय मुझको मिला दो मेरे श्याम से ।।

भजनः – 131

बिना माँ बाप के अनाथ रोये बालिका
दिन गया डूब हुई रात रोये बालिका

नजरें उठाके देखा खुले आसमान को
रो रो पुकारे मालिक दयावान को
देख देख टूटा हुआ हाथ रोये बालिका
ऐ मेरे मालिक तू इतना नाराज क्यों
जन्म से अब तक मैं मोहताज क्यों
बिगड़ी बना दे मेरी बात रोये बालिका
अपने दरद को किससे कहूँ मैं
तेरी दुनिया में अब कहाँ जा रहूँ मैं
छूट गया अपनों को साथ रोये बालिका
जोड़ लिया है मैंने तुमसे ही नाता
तू ही पिता है मेरा तू ही है माता
तू ही बहिन तू ही भ्रात रोये बालिका

भजनः – 132

तेरे दरबार आली की निराली शान ये देखी
सखावत खुद तेरी गलियों में चक्कर काटते देखी
फैलाया जिसने भी दामन तेरे दरबार में मालिक
तुझे देते नहीं देखा मगर झोली भरी देखी

कव्वाली

बिगड़ी बना हमारी, ऐ दो जहाँ के वाली
किस्मत की मैं हूँ मारी, ऐ दो जहाँ के वाली

ऐ बेकशों के दाता, ऐ गम जतो के वाली
फरयाद लेके आते, तेरे दर पे जो सवाली
सरकार के करम से, जाते नहीं हैं खाली
मुझपर भी इक नजर हो ऐ शहनशाहे आली
मैं भी तो हूँ तुम्हारी, ऐ ...
ऐ मेहर बान मालिक, ऐ दीनों के सहारे
भरता है सबका दामन, दरबार पे तुम्हारे
एक बार जो भी रो के, दिल से तुम्हें पुकारे
चमके दुआ करम से, खुशनसीबी के सितारे
अब है हमारी बारी, ऐ ...

भजनः – 13 3

द्वारिकानाथ रणछोड़ प्यारे, बिन दरश अब ना जाए जिया रे
दिन कटते नहीं बिन तुम्हारे, तेरा विरहा बिना मौत मारे

तेरी मानूँ तो कैसे जिऊँगा, और न मानूँ तो कैसे मिलूँगा
धर्म संकट को अब कौन टारे, बिन दरश .....
सूनी सूनी लगे दुनिया सारी, लगा लगने ये जीवन भी भारी
जीवन नैया लगा दो किनारे, बिन दरश .....
तेरा विरहा सहा जाये ना, बिन तुम्हारे रहा जाये ना
रात कटती है गिन गिन के तारे, बिन दरश .....
या तो मुझको बुलालो हे नाथ, या तो आकर रहो मेरे साथ
अब मेरे प्राण तुमको पुकारे, बिन दरश .....

भजनः – 13 4

मन्दिरमें रहते हो भगवन् कभी बाहर भी आया जाया करो
मैं रोज तेरे दर आता हूँ कभी तुम भी मेरे घर आया करो
मैं तेरे दर का जोगी हूँ हुआ तेरे बिना मैं वियोगी हूँ
तेरी याद में आँसू बहते हैं इतना न मुझे तड़फाया करो
आते क्यों मेरे नजदीक नहीं इतना तरसाना ठीक नहीं
मैं दिल से तुमको चाहता हूँ कभी तुम भी मुझे अपनाया करो
मैं दीन हूँ दीनानाथ हो तुम सुख दुखमें मेरे साथ हो तुम
मिलनेकी चाह दिनरात करूँ कभी तुमभी मुझे मिल आया करो

भजनः – 13 5

अब मैं मर मरके जीने लगा हूँ,घूंट आँसूके पीने लगा हूँ
तेरी यादों में रोने लगा हूँ,आँसुओं में मुँह धोने लगा हूँ
अब तू ही एक मंजिल मेरी,याद रह रके आती तेरी
अब मैं छिप छिप के रोने लगा हूँ, आँसुओं.....
धीरे धीरे नशा चढ़ रहा है, दर्द सीने में भी बड़ रहा है
अब तो सपनों में खोने लगा हूँ, आँसुओं.....
झूठे बंधन सभी तोड़ दूँ मैं, तेरे पीछे ये जग छोड़ दूँ मैं
मन की माला पिरोने लगा हूँ, आँसुओं.....
दांव पे हमने जीवन लगाया, हो गया आज सबसे पराया
जो मिला था वो खोने लगा हूँ, आँसुओं.....

भजनः – 13 6

दासी हूँ तेरी रख पास मेरे साँवरे,
कर के दया दे ब्रज वास मेरे साँवरे
कैसे मिटाऊँ इस फूटी तकदीर को,
किसको सुनाऊँ जाके हृदय की पीर को
तुम पे ही लगी अब आस मेरे साँवरे
कर के दया दे ब्रज वास मेरे साँवरे
बोझ बनी हूँ पीहर ससुराल में,
बुरी फँसी हूँ इन रिश्तों के जाल में
लोक लाज गले पड़ी फाँस मेरे साँवरे
कर के दया दे ब्रज वास मेरे साँवरे
छायें हैं चारों ओर अंधेरे,
पल पल भारी है जीवन पे मेरे
जी रही बनके मैं लाश मेरे साँवरे
कर के दया दे ब्रज वास मेरे साँवरे
उजड़ी है दुनिया रहा नहीं कोई,
दुख ने सताया पर फिर भी न रोई
तेरे बिन आज मैं उदास मेरे साँवरे
कर के दया दे ब्रज वास मेरे साँवरे

भजनः – 13 7

मत रो मत रो आज लाडली, सुन ले बात हमारी
जो दुरव से घबरा जाए वो नहीं हिंद की नारी
भारत की नारी की आँखें सब आँखों से न्यारी
उसके हर आँसू में झलकती प्यार की इक फुलवारी
आशा की डोरी से बाँध ले जीवन की लाचारी,जो दुरव ...
अपने मन में दिया जलाके कर ले उजाला गोरी
दिल के ऊपर पत्थर रख ले रोना है कमजोरी
चुपके चुपके दुरव सहने की तू कर ले तैयारी, जो दुरव ...
किसका चला है जोर भाग पर रख तू हरि पे भरोसा
हर जीवन थाली में प्रभु ने दुरव भी यहाँ है परोसा
पता नहीं किस भेस में दाता कर दे मदद तुम्हारी, जो दुरव ...

भजनः – 13 8

ध्यान घनश्याम का दीवाना बना देता है,
दिल को गोकुल कभी बरसाना बना देता है
है मेरे श्याम का ये रूप नीली सी ज्योति
जादू कर सबको परवाना बना देता है
नेम और प्रेम से दिन रैन ध्यान करते जो
उनके जीवन को ये सुहाना बना देता है
घिरे दुःख दर्द आँसुओं से जो भी जीवन में
उनके रोने को भी तराना बना देता है
नहिं मिटती कभी भटकन जिस चंचल मन की
उनके मन को भी ये ठिकाना बना देता है

भजनः – 139

सांझ भई दिन छिप गया, नैना भये उदास
रात कटे कैसे मेरी, श्याम मिलन की आस

पंछी लेजा रे संदेश, मेरे श्याम पिया के देश
चिट्ठी में सब कुछ लिख डाला, बचा न कुछ भी शेष
बिखर गये माला के मोती, चली गई आँखों की जोती
आँसू बीत गये आँखों के, रहे न काले केश
सूख गया सुन्दर तन मेरा, दिल का दर्द सहा बहुतेरा
पल पल तेरी बाट निहारूँ, करजा रे उपदेश
रो रोकर मैं लिखती अर्जी, प्रीत निभाजा ओ बेदर्दी
तेरे प्रेम की चूनर ओढ़ी, धरा जोगिया भेष

भजनः – 140

दुनियाँ की कोई कामना मेरे न काम की,
मीरा दीवानी हो गई, मोहन के नाम की
मैंने तो अपने श्याम को दिल में बसा लिया
दुनियाँ ने मेरे प्यार का विश्वास न किया
संसार से तो वास्ता कोई नहीं मेरा
जिया विकल है श्याम बिन जाता नहीं जिया
दुनियाँ ने दूर करने की कोशिश तमाम की
मीरा दीवानी हो......
बजती मुरलिया श्याम की प्यारी लगे मुझे,
सूरत सलोनी श्याम की न्यारी लगे मुझे
झूठी है दुनियाँ दुनियाँ के झूठे ही लोग हैं
दुनियाँ में सच्ची श्याम की यारी लगे मुझे
मन में बसी है मूरती आनंदधाम की
मीरा दीवानी हो......

भजनः – 141

श्याम तेरी याद सताये, तेरे बिन चैन न आये
रोते हैं नयना, दिल अकुलाये । श्याम ....
सूना है जग सारा, जीवन है सूना, सुख भी दुःख है,श्याम जो तू ना
तुम संग दुःख भी सुख दे दूना । श्याम....
पतझड़ सा लागे तुम बिन सावन, चुभते हैं काँटे से, फूल सुहावन
आके बना दो मन वृन्दावन । श्याम....
तुझ बिन अब तो कोई न भाये, बैठा हुँ तेरी आश लगाये
आजा अब क्यों देर लगाये । श्याम....

भजनः – 142

रग रग में मेरा श्याम इस कदर बस गया
दुःख भी दुःखी हो गया मैं कहाँ फँस गया।
हर बार नए रूप में दुःख आया मेरे पास,
मेरी हँसी को देखकर वो हो गया उदास
हर बार उसको देखकर, मैं यो ही हँस गया। दुःख भी दुःखी....
एकबार सुखके रूपमें भरमाने आ गया,
पहले हँसा के उम्र भर रूलाने आ गया
मस्ती न मेरी कम हुई,चाहे वो डँस गया।दुःख भी दुःखी....
जब भी कभी रुलाने को वो आया सामने,
झट आ गए घनश्याम लगे मुझको थामने
ऐसा है मेरा श्याम, सारे दुःख को ग्रस गया। दुःख भी दुःखी....
जब जब भी करुणदास राग छेड़ने लगा,
तब तब दुःखों का दावानल घेरने लगा
मेरे श्याम की कृपा का तभी जल बरस गया। दुःख भी दुःखी....

आरती: – 143

आरति गावो भक्तमाल की, सुनि सुनि हृदय बसावो भक्तों
कर भगती सुख पावो भक्तों
हरि भक्तन की गाथा पावन, भक्त और भगवान् लुभावन
हरि गुरू संत रिझावो भक्तों, करि भगती सुख पावो भक्तों
भक्तमाल जे सुनै सुनावे, प्रेमाभगती हिय में आवै
हरि सों नेह लगावो भक्तों, करि भगती सुख पावो भक्तों
भक्तमाल बड़भागी पावै, या बिन भगती समझ न आवै
सोये भाग जगावो भक्तों, करि भगती सुख पावो भक्तों
करुण दास यह कथा सुनावै, भक्त और भगवान् रिझावै
जीवन सफल बनावो भक्तों, करि भगती सुख पावो भक्तों

आरती: – 144

गोवर्धन गिरिराज हैं, अद्भुत देव महान
ठाकुर के ठाकुर बने, पूजे सकल जहान

आरती श्री गिरिराज प्रवर की,जन रक्षक पालक गिरधर की ।
हरि को प्रकट रूप गिरि पावन, दुख दारिद भव रोग नसावन
जयति भगत वांछा तरुवर की, आरती श्री ....
भक्तन मोद बढ़ावन हारे, दर्शन सुखद प्रेम संचारे
महिमा गाऊँ आनँदकर की, आरती श्री ....
दूध सनान रु छप्पन भोजन, प्रीती सहित करावैं जो जन
कृपा मिले तिन राधावर की, आरती श्री ....
करुण दास नित आरती गावै, गोवर्धन पद सीस नवावै
बलिहारी जाऊँ इस दर की, आरती श्री ....

नहीं बसूँ वैकुण्ठ में, ना योगिन हिय माहिं ।
भक्त मेरे गावैं जहाँ, रहूँ मैं संशय नाहिं ।।